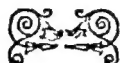


प्रकाशक

श्रीछोटेलाल भार्गव यी० एम्-सी०, एल्-एल्० वी०

गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय

लखनऊ



प्रथमावृत्ति	सितवर, १९१८
द्वितीयावृत्ति	जनवरी, १९२०
तृतीयावृत्ति	जुलाई, १९२१
चतुर्थावृत्ति	अगस्त, १९२२



मुद्रक

श्रीकेसरीदास सेठ

नवलकिशोर-प्रेस

लखनऊ

वक्तव्य

बैंगला के सर्वश्रेष्ठ नाटककार श्रीयुत द्विजेंद्रलाल राय एम्. ए. के नाम से इस समय हिंदी-जगत् भली भाँति परिचित है। उन्हीं के सुप्रसिद्ध प्रहसन "ज्यहस्पर्श" के आधार पर, हिंदी-रंग-मंच पर खेले जाने के योग्य बनाने के अभिप्राय से कुछ फेर फार करके इस पुस्तक की रचना की गई है। हिंदी में ऐसी पुस्तकों का अभाव देखकर ही हम यह पुस्तक "गंगा-पुस्तकमाला" के पाठकों की भेंट करते हैं और आशा करते हैं, यह उन्हें अत्यंत मनोरंजक प्रतीत होगी।

गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय
लखनऊ, १०।१।१६१८

}

संपादक

नाटक के पात्र

(पुरुष)

विजयसिंह	...	राजा
गोपालसिंह	...	राजा का पुत्र (मँझला)
किशोरसिंह	...	राजा का पोता (बड़े लडके का लडका)
भगवतीप्रसाद	...	स्वभावसिद्ध डॉक्टर
श्यामलाल	...	भगवतीप्रसाद का बहनोई
मोहनलाल	} ...	श्यामलाल के दोस्त
भगवानदास		
गगाधर		
कुजविहारी	} ...	राजा के मुसाहब
बनवारी		
मथुरा		
राधेलाल		
इत्यादि		

(स्त्रियाँ)

चपा (रानी)	...	विजयसिंह की स्त्री
चमेली	...	रानी की दूर के नाते की बहन
मोती	...	एक स्त्री
जानकी	} ...	रानी की सखियाँ
सुदर		
श्यामा		
सलोनी		
मोहिनी		

परोसी लोग, दरवान, बालक, वेश्याएँ इत्यादि

सूर्य-मंडली



पहला अंक

पहला दृश्य

स्थान—भगवतीप्रसाद का बैठकरवाना

(भगवतीप्रसाद, श्यामलाल, भगवानदास, मोहनलाल
और गंगाधर बैठे हैं)

भगवती०—राजा विजयसिंह कै पीढ़ी का राजा है जी ?

श्यामलाल—कै पीढ़ी का ? अरे उसका बाप एक
अंगरेज़-फ़ौज के दफ़्तर का क्लर्क था । जिस तरह बना-
भले-बुरे ढंग का ख़याल न करके, वह बहुत-से रुपए
पैदा करके जना कर गया । उस रक़म का बहुत-सा
हिस्सा हाकिमों की डाली और दावत में खर्च करके
विजयसिंह रायबहादुर हो गया । उसके बाद एक दिन
मालूम हुआ, वह राजा बन बैठा है ।

भगवान०—अरे उस साले की बात क्यों करते हो जी ?

भगवती०—क्यों ?

भगवान०—अरे उसके पास कोई भला आदमी जाता है, तो वह साला अपनी जगह से उठता भी नहीं।

भगवती०—तो क्या करता है ?

भगवान०—करेगा और क्या ? ज़रा गरदन हिलाकर, आठ दस दाँत बाहर निकालकर खीसें निपोर देता है।

मोहन०—खीसें क्या निपोरेगा और दाँत ही क्या निकालेगा ! उसके तो सामने के चार दाँत दिन-रात बाहर ही निकले रहते हैं।

भगवान०—नहीं जी नहीं। उनके सिवा और भी चार दाँत बाहर निकालता है।

भगवती०—एक पीढ़ी में और कितना होगा ?
बुनियादी चाल चाहो तो दादा—(छाती पर हाथ रखकर)
ऐसा बुनियादी रईस खानदान तलाश करो।

गगाधर—हालाँकि घर में चूड़े हंड पेलते हैं !

भगवती०—समझे श्यामलाल ! इन नसों में रानी प्रतापकुँअरि का खून है।

श्यामलाल—यह तो वही हुआ, जैसे भड़भूँजों का अपने को राजा भोज का वशधर बताना। अजी रानी प्रतापकुँअरि के साथ तुम्हारा क्या नाता है ?

भगवती०—है जी है ! क्या नाता है सो इस समय ठीक याद नहीं पड़ता। मेरी मा की फुफेरी बहन के

एक जेठ के ससुर के साथ शायद रानी प्रतापकुँअरि के मौमिया के साले की सास का कुछ नाता था ।

भगवान०—तब तो नाता बहुत ही निकट का है ।

भगवती०—इसके सिवा मेरे—परवाया या पर-
नाना—ठीक याद नहीं पड़ता—नवाब आसफुद्दौला से
कोई एक खिताब पाते-पाते रह गए ।

श्याम०—कहते क्या हो जी ! यहाँ तक ?

भगवती०—क्या कहूँ भाई, अगर यमघट-योग में
मेरा जन्म न होता ।

गंगाधर—यमघट ने ही सब बटासराध कर दिया !

भगवती०—मेरे जीवन का इतिहास बराबर इसी
तरह का है । एक बड़ा शादमी होते-होते रह गया—
नहीं हो सका ।

श्याम०—कैसे ?

भगवती०—गहले मेरा चेहरा ही देखो । अगर दोनों
आँखें ज़रा बड़ी होतीं, नाक ज़रा लंबी होती, माथा
ज़रा चौड़ा होता, डील ज़रा ऊँचा होता और रंग ज़रा
और साफ़ होता—तो—

भगवान०—तो फिर माक्षात् कामदेव का अवतार
होते, और क्या !

मोहन०—अफसोस !

श्याम०—मगर अब भी कामदेव नहीं तो भस्मासुर

से कम नहीं हो ।

भगवती०—क्या कहूँ, इसी यमघट-योग ने सब चापर कर दिया !—अच्छा उसके बाद विद्या देखो । लडकपन में अगर ज़रा मन लगाकर पढ़ता—

मोहन०—तो बस एक विद्यादिग्गज हो जाते !

भगवती०—और वश—

गंगाधर—रहने दो भाई, जो हो गया वही काफ़ी है । अब वंश की बान क्या छेड़ते हो ?

(गोपालमिह का प्रवेश)

श्याम०—क्यों जी कुमार बहादुर ! बेवक़्र कैसे ?

गोपाल०—मैं तुम्हारे घर पर गया था । वहाँ सुना, तुम सब ने डॉक्टर साहब के यहाँ आकर अड्डा जमाया है । इसी से यहाँ आ गया ।

श्याम०—सो बहुत अच्छा किया । मेरे यहाँ इस समय बैठने की जगह की ज़रा कमी हो गई है । कुछ प्लेग के चूहे मर गए हैं । डॉक्टर साहब का बैठकज़ाना खूब खुलासा है—हवादार है । अब हम लोगों ने यहीं बैठने का अड्डा ठीक कर लिया है । आओ, तुमसे और डॉक्टर साहब से जान-पहचान करा दूँ । (भगवती को दिखाकर) वही डॉक्टर साहब हैं । इनका नाम है, भगवतीसहाय भोपती ।

गोपाल०—भोपती क्या ?

श्याम०—ए, तुम तो बात पूछते हो और बात की जड़ पूछते हो ! भोपती उपाधि है ।

मोहन०—और, यह उपाधि इन्होंने ही इनके पीछे लगाई है ।

श्याम०—अजी मेरी सुनो । हाल ही में इन्होंने होमिओपैथी की प्रैक्टिस शुरू की है ।

मोहन०—और, यह भी तो कहो कि पहले यह डॉक्टर पुत्तलाल के यहाँ छ रुपए महीने के नौकर थे । बाज़ार से सौदा खरीद लाते और हाज़मे की गोलियों का मसाला कूटा करते थे । कुछ दिन बाद एक २४ शीशी-वाला होमिओपैथी दवाइयों का बक्स खरीदकर और डॉक्टर भादुड़ी के चिकित्साविज्ञान का हिंदी-अनुवाद पढ़कर एकाएक होमिओपैथिक इलाज करने में उस्ताद डॉक्टर बन बैठे ।

भगवान०—अजी निंदा क्यों करते हो । तुम्हारा न-जाने वैसा स्वभाव है ! (गोपालसिंह से) नहीं कुंअरजी, यह सचमुच बड़े भारी डॉक्टर हैं । इन्होंने डॉक्टर बनने के लिये जी-तोड़ मेहनत की है ।

गंगा०—अपना नाता क्यों छिपाए ढालते हो श्यामलाल ?

श्याम०—हाँ, और यह मेरे वही हैं जो कहकर प्रायः हिंदी में गाली देते हैं ।—और भगवती, समझ गए, यह

हमारे राजावहादुर विजयसिंह के साहबजादे गोपालसिंह हैं—बहुत ही भले आदमी हैं ।

गोपाल०—डॉक्टर साहब, आपसे मिलकर मैं बहुत खश हुआ ।

भगवती०—(नम्रता के साथ) मैं भी वैसा ही खुश हुआ !

गोपाल०—आप जब श्यामलाल के साले हैं तब मेरे भी वही हैं ।

भगवती०—बड़े आनंद की बात है । आप लोगों का साला होना मेरे लिये बड़े सौभाग्य की बात है ।

मोहन०—अच्छा जान-पहचान तो हो गई, अब बताओ, क्या खबर है ?

गोपाल०—एक ख़ास ज़रूरत से आया हूँ ।

गंगाधर—क्या किसी के ऊपर नज़र पड़ी है ?

गोपाल०—मामला कुछ इसी के लगभग है । मैं ब्याह करनेवाला हूँ ।

भगवान०—(उछलकर) तुम्हारा—ब्याह !

गोपाल०—क्यों, क्या मेरा ब्याह न होना चाहिए ?
कहिए तो डॉक्टर साहब—

भगवती०—(सम्मति-सूचक सिर हिलाकर) ज़रूर होना चाहिए । Shakespeare के Origin of Condensed Milk ग्रंथ में इस विषय पर एक बहुत ही सुंदर Lecture है ।

मोहन०—व्याह ? ऐसा काम न करना—न करना ।

गोपाल०—क्यों ?

श्याम०—अभी अच्छे खासे हो भैया,—अच्छी तरह घूमते-फिरते हो, नाच कूदकर—

गंगा०—महीन काली पाद का ढाके का धोती-जोड़ा पहनकर—

मोहन०—वनारसी कामदार दुपट्टा ढालकर—

भगवान०—बार्निश का पप-जूता पहनकर—

श्याम०—छड़ी घुमाते—

मोहन०—मूछों पर ताव देते—

भगवान०—दाग की गज़लें गाते—

गंगा०—धीरे-धीरे मुसकिराते फिरते हो ।

श्याम०—फिर व्याह का क्या काम है ?

गंगा०—ऐसा कोरा सठपना तो बहुत कम देखा जाता है ।

भगवान०—यह रोग तो पहले तुम्हारे न था ।

गोपाल०—रोग काहे का ?

भगवान०—रोग ? बड़ा भारी रोग है । भला बताओ तो भगवती बाबू, यह एक रोग नहीं है ?

भगवती०—हाँ—सो—यह एक रोग तो है ही,

Egyptian Pharmacopea में इसका नाम Potentia Rogofobia लिखा है । बड़ी विचित्र बीमारी है । व्याह

होते ही अच्छी हो जाती है। होमियोपैथी में इमकी एक बड़ी अच्छी दवा है। उस रामबाण है।

श्याम०—हाँ जी भगवती, तुम treatment तो करो।

भगवती०—प्रभी लो। क्यों साहब, रात को नींद पड़ती है ?

गोपाल०—पड़ती नहीं तो क्या ?

भगवती०—समय पर स्नान न करने से क्या आप के हाथ पैर झन-झन करने लगते हैं ?

गोपाल०—हाँ कुछ-कुछ।

भगवती०—और, शाम से पहले whisky पिए बिना सिर भाँय-भाँय करने लगता है ?

गोपाल०—ज़रूर।

भगवती०—और, दोपहर के समय—यही दस-ग्यारह बजे के बरू—भोजन में कुछ देर होने से मिज़ाज री-री करने लगता है ?

गोपाल०—सो तो खूब ज़ोर से।

भगवती०—तो फिर चिंता नहीं, रोग ठीक हो गया।

गोपाल०—कैसे ?

भगवती०—बैठिए, दवा देता हूँ। (दवा तैयार करता है)

गोपाल०—क्यों दिक्र करते हो ?

भगवान०—दिक्र नहीं जी, इनकी दवा पियो, आराम हो जायगा—ज़रूर चगे हो जाओगे।

श्याम०—अजी ओ कुमार बहादुर ! तुम लोगों को एक family physician की जरूरत है ?

गोपाल०—हाँ, पिताजी कहते तो थे ।

श्याम०—तो फिर इन्हीं (भगवती) को न रख लो ।

यह बहुत अच्छे डॉक्टर हैं ।

मोहन०—इनका घराना भी बड़ा बुनियादी है ।

गंगा०—घराने का क्या कहना है !

भगवती०—(दवा से भरी शीशी लाकर) यह लीजिए, लेविल-टोबिल किया हुआ सब ठीक है । आधी रात को सोते से उठकर एक दफ़ा पीजिएगा । सबेरे भी अगूर-सेव चखने के पहले ही एक बार सेवन कीजिएगा ।

गोपाल०—लेविल भई, व्याह का तो सब ठीक हो गया है ।

भगवान०—ठीक कैसे हो गया है ?

गोपाल०—व्याह का सब लगभग ठीक ही है । सिर्फ़ अभी कोई कन्या नहीं मिली ।

श्याम०—तब तो देखता हूँ एकदम सब ठीक है । नहीं जी नहीं, अब रोकने की जरूरत नहीं है । जब यहाँ तक ठीक हो गया है—

गंगा०—कन्या क्या मिलेगी ! तुम्हारे गुन सब जानते जो हैं !

भगवान०—तुम्हीं बताओ, तुम्हें कौन अपनी बेटी देगा ?

भगवती०—आपको लडकी नहीं मिलती ? मैं लडकी देता हूँ । आप कौन जाति हैं ?

गंगा०—जाति पूछकर क्या करोगे ? बस समझ लो हिंदू हैं ।

भगवती०—खैर, आप एक खूबसूरत लडकी चाहते होंगे ?

श्याम०—नहीं तो क्या वह एक काली-पुथरी बेदगी दुलहिन पसंद करेंगे ?

भगवती०—थोड़ा, जरूर एक छोटी-सी दुलहिन चाहते हैं ?

गंगाधर—नहीं तो क्या तुम समझते हो कि वह किसी नानी-दादी के साथ ब्याह करेंगे ?

भगवती०—बत, ठीक मिलता जा रहा है । मैं ठीक इसी तरह की कन्या जानता हूँ । लडकी साक्षात् विशाधरी है—

मोहन०—नाचना जानती है ?

गोपाल०—यह क्या आप सच कह रहे हैं ?

भगवती०—सच कह रहा हूँ । क्यों साहब क्या मैं देखने में झूठा आदमी जान पड़ता हूँ ? जानते हैं आप, इन नसों में रानी प्रतापकुँअरि का खून है !

गोपाल०—लडकी को अगर देखना चाहें ?

भगवती०—अभी !—नहीं साहब दो दिन सघर करना होगा । दो दिन के बाद ही प्रसव होगा ।

गोपाल०—प्रसव होगा ? तो क्या लडकी के गर्भ है ?

भगवती०—आप कहते क्या हैं साहब ? ऐसी लडकी के साथ आपका व्याह कराऊँगा ? आपने क्या मुझे ऐसा आदमी समझ रक्खा है ? मेरे कहने का मतलब यह है कि लडकी अभी पैदा नहीं हुई है । यही दो-एक दिन में पैदा होगी ।

गोपाल०—(श्यामलाल से) इस तरह के रत्न और तुम्हारे यहाँ कितने हैं ?

श्याम०—कितने चाहते हो ?

गोपाल०—इसी तरह की कोई एक लडकी न ठीक कर दो ।

श्याम०—इसी तरह की दाढी-मूछवाली ?

भगवती०—(एकाएक) हो गया हो गया ! और एक लडकी है । लेकिन हाँ, उसकी उमर कुछ ज्यादा है—

गोपाल०—कितनी उमर है ?

भगवती०—बहुत अधिक नहीं । यही पैंतालीस वर्ष के लगभग होगी ।

श्याम०—रहने दो ! ज़रूरत नहीं है ! अब उठो ।

मोहन०—कितना दिन चढ़ा है ? भगवती की घड़ी

मैं तो तीन बजे हूँ ।

भगवती०—तीन बजे हूँ ? तो फिर ठीक है । अब साढ़े दस का समय है ।

भगवान०—तब तो भगवती की घड़ी को बहुत ही ठीक कहना चाहिए ।

भगवती०—बेशक ! यह बहुत अच्छी घड़ी है । सिर्फ़ ऐव यही है कि चलती ठीक नहीं । जब छोटी सुई ६ के ऊपर रहती है तब टन टन करके १२ बजते हैं । और मैं समझता हूँ कि अब ३ बजे है ।

मोहन०—अब चलोगे ?

श्याम०—चलो ।

भगवती०—(गोपालसिंह से) साहब, आप कुछ चिंता न कीजिएगा । मैं तीन-चार दिन के अंदर ही एक लड़की लाकर जुटा दूँगा, तब और काम करूँगा । तब तक मैं खाना-सोना सब छोड़ दूँगा ।

श्याम०—पहले अपने लिये तो कोई लड़की खोजो !

गोपाल०—(भगवती से) क्या आपका अभी तक व्याह नहीं हुआ ?

भगवती०—अरे भई, वह दुःख की बात क्यों चलाते हो !

भगवान०—क्यों ?

भगवती०—वही यमघट-योग !

गोपाल०—कैसे ?

श्याम०—इन्होंने अभी एक ज्योतिषी को हाथ दिखाया था, उसने कहा कि इनके जीवन में ऐसा कुछ सुभीता न होगा, क्योंकि यह यमघट-योग में पैदा हुए हैं।

गोपाल०—(भगवती से) क्यों जी सच ?

भगवती०—(सिर ठोकर) क्या कहूँ साहब, शत्रु भी इस यमघट-योग में पैदा न हो ! (गाता है)

[लावनी]

हो सके अगर तो, तुमको राम दुहाई,
यमघट-योग में जन्म न लेना भाई !

जन्मा में उस दिन, तेल लगाकर वैसे
काला कर डाला टाल धूप में ऐसे।
काला देखा तो किया न आदर मा ने,
अपना न पिलाया दूध मुझे माता ने।

पी दूध गऊ का बुद्धि बैल की पाई।

यमघट-योग० ॥ १ ॥

फिर मिलकर सब ने हाथ ! खालिया भेजा,
उस वचपन ही में मुझे मदरसे भेजा।
था गुरु कसाई, इतने चोटे मारे,
गुदी कर दी पिलपिली, बंत सटकारे।

मैंने भी विद्या नहीं पढ़ी, रिस आई।

यमघट-योग० ॥ २ ॥

तब किया बाप ने बढ स्कूल का जाना,
फिर मैं नौकर हो गया, मिला परवाना ।
हालों कि खुशामद की मैंने बहुतेरी,
अफसोस ! अचानक छुटी नौकरी मेरी ।

घर बैठा माथा ठाँक, खोल नैकटाई ।

यमघट-योग० ॥ ३ ॥

फिर करना चाहा ब्याह पिता ने मेरा,
लडकीवालों को जाकर घर-घर घेरा ।
जब देखी मेरी बुद्धि, रूप, तब माई,
कन्या की भी दर चढी—हुई न सगाई ।

क्या कहूँ ? न मैंने चैन जन्म-भर पाई ।

यमघट-योग० ॥ ४ ॥

(सत्र का प्रस्थान)

दूसरा दृश्य

स्थान—राजमहल का बाग

(टहलती हुई चमेली का प्रवेश)

चमेली—अच्छा बाग है । जी चाहता है, रोज़ यहाँ
आकर माला बनाऊँ और गाना गाऊँ । यहाँ सब कुछ
अच्छा है । केवल यह बूढ़ा खूसट राजा दिन-रात मुझे
जलाया करता है । मुझे अकेली पाते ही पास पहुँच जाता

है। बढिया पोशाक की झलक दिखाता, थोखें मटकाता, प्रिजाघी मृछों पर ताव देता, बंधे हुए दांत चमकाता और आकर बातचीत शुरू कर देता है। देखकर मेरी देह जैसे सुलग उठती है। राजा का मैंझला लड़का भी बुरा नहीं है—लेकिन राजा का पोता एकदम सब से बढ़कर है। सुना है, वह यहाँ रोज़ आकर कॉलेज का सबक याद करता है। देखूँ, आज आता है कि नहीं। मगर कहाँ, अभी तक तो नहीं आया। हाँ हाँ, वह आ रहा है। तो फिर मैं इस पेड़ के सहारे बैठकर, गरदन को इस तरह घाई और झुकाकर, इस तरह माला बनाऊँ और गीत गाऊँ जैसे मैंने उसे देख ही नहीं पाया।—(गाती है)

ऋतुपति लौटि प्रवासी आयो,
प्रवृत्ति-प्रेयसी को आदर करि विरह-विपाद मिटायो।
नव पल्लव-दल-फूल-फलन सों करि सिंगार सजायो,
मजु मजरी पुज-रचित उपहार हार पहिरायो।
प्रकृतिहु बनि रसाल पिकरव सां अति अनुराग जनायो,
छके पराग अलीगन रसिकन शुभ सवाद सुनायो।

(किशोरसिंह का प्रवेश)

किशोर—(स्वगत) यह लो, यहाँ अकेले बैठकर मौलमिरी के फूलों की माला बनाई जा रही है और गीत गाया जा रहा है। निश्चय इसे मेरा आना मालूम हो गया है। लेकिन दिखाया जा रहा है कि जैसे कुछ देखा

ही नहीं । सब ढोंग है । मैं भी यहाँ बैठूँ, जैसे कुछ देखा ही नहीं, इस तरह कविता उड़ाऊँ ।—(प्रकट)—

क्यों लग्यो चंद विधुतुद आइ के
 क्यों अरविंदन भृग छिपायो,
 क्यों भए श्वेत अश्वेत मराल,
 वियोगिनि क्यों विसि चंदन लायो ।
 क्यों मृगराज मृगीन कियो वश,
 क्यों गजराज गजी सिर नायो,
 साँची कहौ पिय भेद लहाँ,
 रजनीपति के घर क्यों रवि आयो ।

चमेली—ए कविता पढ़ी जा रही है । निश्चय ही यह एक कोई प्रेम की रसीली कविता है । दु ख यही है कि मैं कुछ समझ नहीं सकी । ए छिपा-छिपाकर देखा जा रहा है, जैसे मैं कुछ देख ही नहीं रही हूँ । हूँ ! यह देखो, पेड़ के नीचे बाएँ हाथ के ऊपर सिर रखकर लेट गए । दाहने हाथ से पोथी के पन्ने उलटे जा रहे हैं । माँग भी बीच-बीच में देखी जा रही है कि ठीक है या नहीं । यह सब किसके लिये जी, किसके लिये ? यहाँ मेरे सिवा और कौन है ? सब समझ रही हूँ । अब मैं निहायत दूधपीती बच्ची नहीं हूँ । आँखें किताब के ऊपर हैं और मन यहाँ धरा हुआ है । मैं भी उठकर गाती हुई टहलूँ, जैसे कुछ जानती ही नहीं । (गाती है)

प्रेम है सबल सहायक सग ।

मन-मत्तग पै चढि चित डोलै नए निकाले ढग,

प्रेमविवश दोउन के मन मे छाई नई उमग ।

या मग मिलै एक दूजे सों, ज्यों सागर म गग,

दोऊ मिलि है जात एक, ज्यों हर-गौरी अरधग ।

किशोर—(स्वगत) हूँ ! गाने का subject बदल गया । निश्चय मुझे देख पाया है । मैं क्रसम खाकर कह सकता हूँ । लेकिन दिखाया यह जा रहा है कि जैसे कुछ देख ही नहीं पाया । यह गाना किसके लिये है जी, किसके लिये ? यहाँ पर मेरे सिवा और कौन है ? सब समझता हूँ चमेली, सब समझता हूँ । यह तो गाना गा रही है, अब मैं क्या करूँ ? मैं तो गाना जानता ही नहीं । मैं कविता उड़ाऊँ । मगर कोई मतलब की कविता तो याद ही नहीं पड़ती—आ गई—(प्रकट)—

ढाढी के रखैयन की दाढी-सी रहत छाती

वाढी मरजाद अब हृद हिंदुआने की ।

काढि गई रैयत के दिल की कसक सब

घटि गई ठसक तमाम तुरफाने की ।

और और—हाँ—

मोटी भई चडी विन चोटी के सिरन खाय

खोटी भई सपति चक्रता के घराने की ।

चमेली—(स्वगत) यह कैसी कविता है । इस मौजूदा

मामले के साथ तो इसका कुछ लगाव नहीं जान पड़ता।—
देखूँ—और ज़रा—(गानी है)

प्रेम में पागल मत होना ।

सोच-विचार समझकर करना, पड़े न पीछे रोना,
सुधा म्वाद के लालच में पड, विय के बीज न बोना ।
पहले कसकर खूब परख लो पीतल है या सोना,
चमक-दमक में रीझ कहीं अपना सर्वस्व न खोना ।

किशोर—(स्वगत) मैं भी कोई कविता पढ़ूँ । कम
नहीं पढ सकता । (प्रकट)—

कछु गजपति के आहटन छिन-छिन छीजत शेर,
विधु-विकास विकसत कमल कछु दिनन के फेर ।
बिना तार के तार ज्यों दोउन के दग दौय,
देत खबर बिजुरी सदृश दोउन खटका खोय ।

चमेली—(स्वगत) उहँ ! कुछ समझ में नहीं आया ।
अच्छा तो चलना चाहिए ।—(गाती है)

हाँ जवानी का है दरिया बढ रहा,
प्रेम का तूफान भी है बढ रहा ।
हूँ मैं चक्कर में, न मिलती थाह कुछ,
उठ रहीं लहरें, है दिल भी बढ रहा ।
क्या दुवा देगा किनारा खींचकर ?
किसलिये किस बात पर है अड रहा ?

(गाते-गाते प्रस्थान)

किशोर—(स्वगत) हाँ ! अच्छा ! मैं भी कविता पढ़ता हुआ दूसरी ओर से जाऊँ ।—(प्रकट)—

मल्लिकान मजुल मल्लिद मतवार मिले

मद-मद मास्त मुहीम मनसा की है,

कहै पदमाकर सो नादित नदीन नित

नागरि नवेलिन की नजर नसा की है ।

दौरत दरेरे दैत दादुर सुदृढ़ दीह

दामिनि की दमक दिसान विदिता की है,

बादरन बूँटन विलोकाँ बगुलान बाग

बगलन बेलिन बहार बरसा की है ।

(प्रस्थान)

तीसरा दृश्य

स्थान—राज-सभा

(राजा और उनके मुसाहब)

(राजा गाता है)

राजा—हो सकता मैं एक बड़ा ही वीर, मगर है सोच यही,
गोलें-गोली की गटवट में रहता नहीं दिमाग सही ।
और, लगे बारूद बुरी बंदवृ उसकी है नहीं पसंद,
खटी देख सगीन साँभ ही हा जाती है जैसे बंद ।
खुली देख तरवार मुझे सिर धड़ से अलग समझ पड़ता,

वाक्य-वीर रह गया सीमर, नहीं इद्र से भी लडता ।
होता एक बड़ा भारी—

मुसाहब— जी हाँ, जी हाँ, सो तो है ही ।

राजा—हो सकता मैं प्रवतच का पडित एक बड़ा भारी,
किंतु 'खोज' का नाम सुने ही आती जूड़ी की पारी ।
देश बड़ा है गरम, विछौना खूब नरम, उस पर भाई ।
प्यारी की फिर हँसी चरम, बेमरम नींद खुद से आई ।
कौन करे मुडघुन इस घुन में, अपने मन में सोच यही,
प्रवतच की चर्चा छोटी, स्त्री-तत्त्वज्ञ बना तब ही ।
नहीं तो होता एक बड़ा—

मुसाहब— जी हाँ, जी हाँ, सो तो है ही ।

राजा—हो सकता मैं एक महाकवि ऊँचे दर्जे का निश्चय,
पर कविता लिखने बैठूँ तब नहीं काफिया होता तय ।
भाषा रहती खटी, न बैठे, बैठा रहता निर्जन में,
भाव न लाठी मारे पर भी उठते हैं मेरे मन में ।
पैर हिलाऊँ, मूछ मरोटूँ लाख, मगर है सब बेकार,
नीरव कवि मैं रहा इसी से कुढ़कर अपने मन में यार !
नहीं तो होता मैं ऐसा—

मुसाहब— जी हाँ, जी हाँ, सो तो है ही ।

राजा—देखो वक्ता राजनीति का हो सकता मैं कम से कम,
मगर खड़े होते ही मुझको स्मरण-शक्ति दे जाती दम ।
रटी हुई बातें भी भूलें, ऐसी होती है उलझन ,

मौला पाकर भाव सभी विद्रोही हो टाल गच्छन ।
हजार खोसा, दाढी के ऊपर भी अपना फेरा ताग ,
बैठकखाने का ही बक्ता रहा मगर तुम मर के नाग ।
और नहीं तो एक बडा—

मुसाहब— जी हाँ, जी हाँ, सो तो है ही ।

राजा—देखो क्षमता बहुत बड़ी थी मुझमें और न कुछ थी अब,
केवल पहले धक्के ही से जाता अत तलक में गूग ।
मिलता अगर सुयोग मुझे तो होता एक कौटुम्बी नामी—
टॉक्टर, बैरिस्टर या मिस्टर अथवा पब्लिक का नामी ।
पर वह धक्का नहीं दिया अफसोस ! किसीने स्मीलिंग—
जो था वही रह गया, चिढ़कर पेंग पर पेंग बस गूग पिण ।
और नहीं तो—समझे—हाँ—

मुसाहब— जी हाँ, जी हाँ, सो तो है ही ।

राजा—क्यों मधुरा ! इसमें कोई संदेह है कि मैं मन
पर रखता तो एक बडा आदमी हो सकता था ?

मधुरा—कुछ भी नहीं ।

राजा—कठिन ही क्या था ? क्यों जी बनवारी ?

बनवारी—और नहीं तो क्या राजा साहब !

राजा—चाहने से एक बहुत बडा आदमी हो ही
सकता था । लेकिन चाहा ही नहीं ।—हाँ जी रावेजाल,
चाहा ही नहीं ।

राधे०—चाहा ही नहीं । यही कारण है, और क्या !

राजा—चाहा नहीं । तुम क्या सोच रहे हो कंजबिहारी ?

कुंज०—राजा साहब, मुझ पकाएक एक पुराना क्रिस्सा याद आ गया ।

राजा—क्या क्रिस्सा ? कुंजबिहारी किम्मा कहने में उस्ताद है ।—क्या क्रिस्सा कंजबिहारी ?

कुंज०—क्रिस्सा यही है कि एक मियाँ के पास एक कुत्ता था । वह उस कुत्ते की बड़ी बड़ाई किया करता था । कहता था कि वह कुत्ता चाहे तो शेर का शिकार कर सकता है । लोग इसी पर विश्वास करते थे । एक दिन उस कुत्ते को एक सियार के आगे से दुन दवाकर भागते देखकर एक आदमी ने कहा—मियाँ, तुम्हारा कुत्ता चाहे तो शेर का शिकार कर सकता है, फिर सियार को देखकर क्यों भागा जा रहा है ? इस पर मियाँ बोले—जरूर शेर का शिकार कर सकता है, मगर न चाहे तो कुछ नहीं कर सकता । (भगवती का प्रवेश)

राजा—वह लो डॉक्टर साहब आ गए । (मुसाहबा से) हाल ही में मैंने इनको राज-परिवार के डॉक्टर के पद पर बहाल किया है । क्यों मथुरा, ठीक किया न ?

मथुरा—सो तो राजा साहब आपने उचित ही किया है ।

राजा—(बनवारी से) यह बहुत ऊँचे दर्जे के डॉक्टर हैं ।

वनवारी—दूसरे डॉक्टर भादुड़ी हैं ।

राजा—डॉक्टरों जानते हैं सो तो जानते हाँ ह, नाचना जानते हैं और गाना भी जानते हैं । और—और आप क्या जानते हैं डॉक्टर साहब ?

भगवती—सोना जानता हूँ, खड़ा होना जानता हूँ, देकली लगाना जानता हूँ ।

(मुसाहब लोग अत्यंत हर्ष प्रकट करत हैं)

राजा—रानी को देख लिया डॉक्टर साहब ?

भगवती—जी हाँ, बहुत अच्छी तरह ।

राजा—कैसी हैं ?

भगवती—वह इस समय भद्र जवानी में भरी हैं ।

राजा—अजी नहीं, उनका शरीर कैसा है ?

भगवती—शरीर खूब गोलमठोल और गदबदा है ।

राजा—नहीं डॉक्टर साहब, आप मेरा मतलब नहीं समझे । उनकी तबियत का क्या हाल है ?

भगवती—तबियत ! सो—या तो अच्छी हो जायँगी और या मर जायँगी, कोई चिंता नहीं है ।

कुन०—आप कहते क्या हैं ?

भगवती—इसमें कुछ भी सदेह नहीं है । अगर अच्छी हो जायँ तो समझिएगा कि मेरे इलाज करने से अच्छी हुई । और अगर मर जायँ तो समझिएगा कि किसी डॉक्टर के बावा की मजाल नहीं जो उन्हें बचा सके ।

राजा—डॉक्टर साहब, मेरा हाथ तो देखिए ।

भगवती—(नाटी देखकर) महाराज आप बहुत चगे हैं । जीते रहते मरने का कुछ खटका नहीं है ।

कुंज०—तो यह ठीक है न ?

भगवती—ठीक ? एकदम निश्चित है । शायद आपने डॉक्टरी विद्या नहीं पढ़ी ? बहुत ही विचित्र विद्या है । इस विद्या के बल से जीते हुए आदमी को देखकर ठीक कह दिया जा सकता है कि वह जीता है ।—जान पड़ता है, आपने *Themistocle's Treatise on Cerebral Congregation* नहीं पढ़ा ? बहुत ही ऊँचे दर्जे की किताब है ।—राजा साहब, मैं आपको अभी एक ऐसी दवा देता हूँ, जिसमें आपको जल्द ही *gout* या *diabetes* हो जाय ।

कुंज०—रोग होने के लिये दवा दोगे ?

भगवती—शायद आप जानते नहीं हैं । जान पड़ता है, तो आपने *Cicero's Oratorio on Fashionable Diseases* नहीं पढ़ा । इस तरह का एक रोग हुए बिना कोई बड़ा आदमी नहीं हो सकता । कम से कम आज तक तो कोई नहीं हुआ ।

राजा—लेकिन डॉक्टर साहब, मैं चाहता तो एक बहुत बड़ा आदमी हो सकता ।

भगवती—यह तो तय है । इस बारे में आपके साथ

मेरा जीवन बहुत मेल खाता है। आप चाहते तो एक दड़े आदमी हो सकते थे, और मैं बड़ा आदमी होते-होते रह गया, नहीं हुआ।—मो कोई चिंता नहीं है। मैं दवा देकर आपको बड़ा आदमी किए देता हूँ।

मथुरा—क्यों साहब, दवा देकर भी बड़ा आदमी बनाया जा सकता है ?

भगवती—ओ, तो मैं देखता हूँ, आपने होमियोपैथी नहीं पढ़ी। Symptomatic treatment विचित्र है ! अद्भुत है !

कुज०—तो शायद इससे खोई हुई गज भी पाई जा सकती है।

भगवती—ओ !—अच्छा सुनिए। एक दफ़ा एक आदमी की दादी मर गई। वह आदमी मूछ-दादी मुड़ाकर, क्रिया-कर्म बगैरह करके, मेरे पास आकर हाज़िर हुआ। मैंने, उसकी दादी कब मरी, किस तरह उसे जलाने के लिये ले गए, जलाने में कै मन लकड़ी लगी, क्रिया कर्म में कितने रुपए लगे, तेरहों के दिन कितने ब्राह्मण खिलाए गए, दक्षिणा कितनी दी गई, बगैरह-बगैरह symptoms ठीक मिलाकर, उस आदमी को एक dose दवा दी। जैसे दवा दी वैसे ही उस आदमी ने घर जाकर देखा, उसकी दादी जी उठी, और खुद उसके चेहरे पर दादी-मूछ निकल आई है।

५ कुज०—(स्वगत) चाचा रे ! यह तो गप उड़ाने में

मुझसे भी बढ़ गया । (हाथ जोड़कर भगवती से)
हुजूर ! डॉक्टरों करने आए हैं डॉक्टरों कीजिए; हम
लोगों की रोज़ी न मारिएगा ।

भगवती—ना ना, कोई चिंता न करो । अच्छा तो
मैं जाता हूँ । अभी किशोरसिंह को देखने जाना है ।

राजा—क्यों ? किशोर को क्या हुआ है ?

भगवती—वह चंद्रमा की ओर ताककर आजकल
खूब लंबी-लंबी साँस लेता है । यह एक बहुत कठिन
रोग है । Xenophon's Analysis of Metaphysical
Symptoms में इसे Peregrine Pickle कहते हैं । अच्छा
तो मैं अब जाता हूँ । (व्यस्तभाव से प्रस्थान)

राजा—यह आदमी भारी विद्वान् देख पड़ता है ।

मथुरा—बड़ा भारी ।

राधे०—इसे क्या तनझाह दी जाती है राजा साहब ?

राजा—साल में ३७१) रुपए ।

कुंज०—तब तो यह बेशक एक दिग्गज पंडित है ।

राजा—देखा बनवारी, फर-फर करके न-जानें कितनी
बड़ी-बड़ी किताबों के नाम ले गया !

बनवारी—ओ बेशक !

(मोती को लेकर एक पहरेदार का प्रवेश)

पहरेदार—हुजूर ! ले आया । बहुत मुशकिल से
हुजूर मिली है !

राजा—ले आया। अच्छा किया। मैं तो जानता ही था कि जब तुम ऐसे होशियार वक्रादार आदमी को यह काम सौंपा है तब काम पूरा हुए बिना नहीं रह सकता। यह गाना जानती हैं ?

पहरे०—हुजूर ! बहुत अच्छा गाना गाती हैं। छपनछुरी के माँकिक गाती हैं।

राजा—(मोती से) तुम्हारा नाम क्या है ?

मोती—मोती।

राजा—गाना जानती हो ?

मोती—मैं गाना नहीं जानती।

राजा—जानती क्यों नहीं हो। तुम्हारी उमर क्या है ?

मोती—मैं नहीं जानती।

राजा—हर बात के जवाब में 'नहीं जानती' के सिवा और कुछ नहीं। यह क्या बात है ?

पहरे०—हुजूर, इनकी उमर पंद्रह साल की है।

हुज०—यह जब पैदा हुई थीं तब शायद तूने ही जाकर लगन गिनी थी ?

राजा—अरे कुछ गाओ—तुमको इनाम मिलेगा।

(पहरेदार से) तुम जाओ। (पहरेदार का प्रस्थान)

मोती—(गाती है)

“काहे भयो पतझार रामा, हमरी विरियाँ”

राजा—ना ना, यह देहासी गाना नहीं, कोई उर्दू की गज़ल गाओ ।

मोती—उर्दू मैं नहीं जानती ।

राजा—जानती क्यों नहीं हो । तुमको साथ में नाचना भी होगा ।

मोती—मैं नाचना नहीं जानती ।

राजा—सभी बातों के लिये 'नहीं जानती' कहने से काम नहीं चलेगा । मैं तुम्हें एक बनारसी ज़री की साड़ी दूंगा । कोई उर्दू की गज़ल गाओ ।

(मोती गाती है—गज़ल)

गर यार न हो सकी पैमाना हुआ तो क्या ?
 मामूर शराबों से मैखाना हुआ तो क्या ?
 हम इश्क के वदे हैं मजहब से नहीं वाफ़ि ,
 गर कावा हुआ तो क्या, बुतखाना हुआ तो क्या ?
 जब दर्द न हो दिल में क्या इश्क मजा देवे ,
 कहने को मला कोई दीवाना हुआ तो क्या ?
 इस इश्क की आतिश से जलते हैं सभी कोई ,
 गर शमा हुई तो क्या, परवाना हुआ तो क्या ?
 माशूक के कानों तक अब तक नहीं पहुँचा मैं ,
 यह अश्क मेरा यारो ! दुरदाना हुआ तो क्या ?
 जहाँगीर-सा शहजादा था इश्क से बह गाफ़िल ,
 आबाद हुआ तो क्या, वीराना हुआ तो क्या ?

राजा—खुब ! खुब !

मुसाहब लोग—वाह ! तोफ़ा है ! क्या बात है !

सुभान अल्ला !

राजा—अच्छा तो तुम अब जाओ ।—ओ रे !—

(पहरदार का प्रवेश)

राजा—अरे इन्हें ले जाओ ! समझे ! पहुँचा दो !

(इशारा करता है)

पहरे०—जो हुकम राजा साहब ।

(मौती को लेकर प्रस्थान)

राजा—(जाते-जाते मुसाहबों से) तुम लोग क्या कहते हो ?

मधुरा—हूँ ! (सम्मतिसूचक सिर हिलाता है)

राधे०—(प्रसन्नतासूचक भाव से) ज़रूर !

चनवारी—(वैसे ही भाव से) जाइए !

कुज०—(उछलकर) आपके मतलब की चीज़ है !

(सब जाते हैं)

चौथा दृश्य

स्थान—अंतःपुर

(सखियों का गीत)

बटे मजे में हम सब हैं जी, आवे हँसी हँस जी भर ,

जी चाहें तब जी भर नाच आजादी से चल-फिरकर । बटे० ।

चंद्र वदन को उठा-उठाकर वाते करतीं हँस-हँसकर ,
 डाल मोहनी नर को वानर कर द जो देखे दम-मर । बडे० ।
 अगर खटी हाँतो फिर हमको चलना-फिरना दूँमर है ,
 बैठें तो फिर खटी न होंगी, हमको जी किसका डर है ? बडे० ।
 (रानी का प्रवेश)

रानी—जानकी, भला बता तो सही, मैं अभी कहाँ
 से आ रही हूँ ?

जानकी—राजा के पास से ।

रानी—ठीक कहा !—सुंदर !

सुंदर—रानी जी !

रानी—जलम-जलम मुझे बूढ़ा ही वर मिले ।

सुंदर—इसके लिये क्या करोगी ? जो होना था,
 हो गया ।

रानी—नहीं सुंदर, मैं सब कहती हूँ, बूढ़ा मर्द जैसा
 जोड़ू का दबाव और दुलार करना जानता है, वैसा और
 कोई नहीं ।—क्यों सलोनी, उससे बढ़कर भक्ति और
 श्रद्धा कौन कर सकता है ?

सलोनी—दबाव और दुलार तक तो समझ में आया,
 मगर जोड़ू की भक्ति और श्रद्धा कैसी ? जोड़ू देवता है
 या गुरु ?

रानी—तू भी बेवकूफ ही है । भक्ति और श्रद्धा के माने
 यहाँ प्यार और मोहब्बत हैं । श्यामा, अगर तू मेरे ऊपर

राजा का प्यार एक बार देखती !—बैठने को कहने से बैठते हैं, और उठने को कहने से उठते हैं !

सुंदर—तो यह कहो कि तुम उन्हें बदर का नाच नचाती हो ।

रानी—वह राजा आ रहे हैं । तुम लोग आड़ में चली जाओ ।

(सखियों का प्रस्थान)

(चमेली का प्रवेश)

रानी—ओः !—राजा नहीं हैं । चमेली !

चमेली—क्यों, क्या मैं पसंद नहीं हूँ ?—खैर, तुम यहाँ हो और मैं तुमको खोज-खोजकर हैरान हो रही हूँ ।

रानी—क्यों ? क्या हुआ ?

चमेली—तुम, वहन, अपने राजा को ज़रा भी नहीं देखतों । वह दिन-रात मेरे पीछे-पीछे फिरा करते हैं ।

रानी—यह क्या कह रही हो ?

चमेली—सच, मुझे ज़रा भी चैन नहीं है ।

रानी—नहीं चमेली, यह तुम झूठ कह रही हो ।

चमेली—अच्छा क्या एक दिन अपनी आँखों से देखना चाहती हो ?

रानी—हाँ देखना चाहती हूँ ।

चमेली—सच ?

रानी—हाँ सच ।

चमेली—अच्छा तो एक दिन दिखा दूँगी । लो वह

राजा इधर ही आ रहे हैं। मैं अब जाती हूँ। तुम्हें कल या परसों ही दिखा दूँगी।

(प्रस्थान)

(राजा का प्रवेश)

राजा—रानी, तुम यहाँ अकेली क्यों बैठी हो ?

रानी—लो, अब दुकेली हो गई।

राजा—चमेली क्यों चली गई ?

रानी—तुमको देखकर।

राजा—क्यों, मुझसे शरमाती क्यों है ?

रानी—मैं भी तो वही कहती हूँ कि राजा बूढ़े आदमी हैं, उनसे काहे की शरम ?

राजा—ना रानी, मैं अभी वैसा बूढ़ा नहीं हुआ।

रानी—वह भी तो यही कहती है।

राजा—सच ? वह भी यही कहती है ?

(सतोष का भाव दिखाता हुआ हँसता है और मूछों परताव देता है)

रानी—वह कहती है कि जो मर्द साठ बरस की उमर में व्याह कर सकता है, वह बूढ़ा होने पर भी जवान क बाबा है।

राजा—ना रानी, मेरी उमर अभी तक साठ बरस का नहीं हुई।

रानी—और अगर साठ बरस की उमर हो भी तो क्या है। तुम सचमुच देखने में अपने लड़के गोपालसिंह से भी छोटे जान पड़ते हो।

राजा—छोटा जान पड़ता हूँ—क्यों ? हँ हँ हँ हँ ।

(सतोष का भाव दिखाता है)

रानी—जान नहीं पड़ते हो तो और क्या । गोपाल तो तुम्हारा लड़का ही नहीं जान पड़ता ।

राजा—(स्वगत) गाली देती है । (प्रकट) मगर रानी, गोपाल मेरा ही लड़का है ।

रानी—मैं क्या कहती हूँ कि नहीं है ? मैं कहती हूँ कि देखने से जान नहीं पड़ता । बल्कि तुम्हारा पोता किशोरसिंह देखने में कुछ-कुछ तुम्हारा लड़का सा जान पड़ता है ।

राजा—लेकिन रानी, किशोर तो मेरा लड़का नहीं है ।

रानी—तुम्हारा लड़का क्यों होने लगा । तुम्हारा लड़का होना तो उसके बाप के नसीब में था । (किशोर का प्रवेश)

राजा—क्यों भई, यहाँ किसलिये आए हो ?

किशोर—ओ !—दादाजी ? मैं समझा था—

राजा—क्या समझे थे ? मुझे देखकर क्या श्रीकृष्णनन्दन कामदेव का बोला हुआ था ?

किशोर—जी नहीं—आपको देखकर पवननन्दन हनुमान् का खयाल हो आया था । (प्रस्थान)

रानी—भला बताओ, किशोर यहाँ क्यों आया था ?

राजा—क्यों ?

रानी—चमेली की खोज में आया था ।

राजा—एँ—चमेली की खोज मे—एँ सो—

रानी—मैं कहती हूँ, किशोर के साथ चमेली का ब्याह क्यों न कर दिया जाय ।

राजा—एँ—सो—सो—सो किम तरह होगा ?

रानी—क्यों न होगा ? किशोर की उमर ब्याह के लायक हो गई है । चमेली की भी उमर १५-१६ बरस की होगी । बाप की एक ही सतान होने के कारण अब तक उसका ब्याह नहीं किया गया । अब तो उसका ब्याह होगा ही ।

राजा—हाँ—सो—चमेली का ब्याह अगर अभी न हो तो क्या कुछ हर्ज है ?

रानी—क्यों ? क्या तुम्हारा खुद उसके साथ ब्याह करने को जी चाहता है ?

राजा—नहीं जी—और तुम्हारे रहते वह हो ही कैसे सकता है ?

रानी—कहो तो न हो मैं मर ही जाऊँ ।

राजा—(स्वगत) आहा, ऐसा दिन कब होगा ? (प्रकट) नहीं जी, तुम क्यों मरोगी ?

रानी—मैं कहती हूँ कि तुम मेरे मरने की राह क्यों देखते हो ? और अगर मेरे मरे बिना तुम ऐसा न कर सकते हो, तो फिर मैं मर ही क्यों न जाऊँ । तुम भी मझे से और एक ब्याह कर लो । चार ब्याह तक तो हो गए हैं—पाँचवाँ भी सही ।

राजा—ना रानी, अब की तुम मर भी जाओगी तो मैं और क्याह नहीं करूँगा ।

रानी—जान पड़ता है, तुमने यह ठीक कर रक्खा है कि मैं तुम्हारे आगे ही मरूँगी । (क्रोध का भाव दिखाकर) सो मैं क्यों मरूँ ? तुम्हारा जी चाहे तो तुम मर जाओ । (प्रस्थान)

राजा—इसने कैसे जान लिया । ये औरतें जरूर जानती हैं ! मर्द लोग जो करतूत करते हैं सो तो जानती ही हैं—और जो करतूत नहीं करते हैं उसकी भी खबर पहले से पा जाती हैं । आहा ! मनोविज्ञान का ऐसा एक तत्त्व मैंने खोज निकाला । पास कोई आदमी भी नहीं है जो गावासी दे ।
(प्रस्थान)

पाँचवाँ दृश्य

स्थान—चमेली के सोने का कमरा

(चमेली अकेली)

चमेली—दीदी अभी तक क्यों नहीं आई ? मैंने आज उन्हें राजा के दग दिवाने के लिये कहा था । राजा तो अभी मेरे पास आकर पहुँच जायगा, बल्कि आता ही होगा । मगर दीदी कहाँ रह गई । (व्यग्रता का भाव दिखाती है) आः, देखती हूँ, मग खेल मिट्टी हुआ चाहता है ।—
(नेपथ्य की ओर देखकर) खैर, वह आ तो रही हैं—

(रानी का प्रवेश)

चमेली—दीदी आ गई ? मैं तुम्हारी ही राह देख रही थी ।—हाँ तो आज ज़रूर ही देखोगी ?

रानी—देखने तो आई ही हूँ ।

चमेली—अच्छा तो तुम इस मसहरी के उस पार खाट के पीछे चुपचाप बैठी रहो । वहाँ से सब तमाशा साफ़-साफ़ देख सकोगी । मगर देखो, अख़ीर तक चूँ न करना । तुम जानती हो कि तुम्हारे स्वामी तुम्हारे सिवा और किसी को नहीं जानते । वही तुम्हारा भ्रम तुमको आज दिखाए देती हूँ । जाओ, छिप रहो । मैं राजा से कह दूँगी कि तुम मौसी के यहाँ यों ही सब को देखने-भालने गई हो, शाम तक वहाँ से लौट आओगी । लेकिन देखो बहन, अंत तक चुप रहना ।

रानी—अच्छा वही सही ।

चमेली—और देखो बहन, अंत को मुझे इस बारे में कुछ कहना-सुनना नहीं ।

रानी—नहीं—कुछ नहीं कहूँगी ।

चमेली—अच्छा तो अब जाओ—छिप रहो । मैं तब तक टहल-टहलकर गीत गाती हूँ । (रानी छिप रहती है)

(चमेली गाती है)

ठुमरी—पीलू

उन बिन कटें कैसे रतियाँ ।

दूँढ-दूँढ मैं हारी गुइयाँ, नहिँ सैयाँ मिलत—

हैं उन विन कटें कैसे रतियाँ ।

हिया में रहत तऊ दूर वसत हैं, करत हाय ! हम सन घतियाँ ।

जिया की जरन यह कैसे मिटत—उन० ।

(राजा का प्रवेश)

राजा—चमेली तुम यहाँ अकेली हो ?

चमेली—हां आप ही के आने की राह देख रही थी ।

राजा—यह क्या, आज तो बड़ी मेहरबानी देख पड़ती है ।

मैं आज किसका मुँह देखकर उठा था ?—रानी कहाँ हैं ?

चमेली—वह मौसी के यहाँ मिलने-जुलने गई हैं—
शाम तक आवेंगी ।

(बैठ जाती है)

राजा—यह तो बहुत अच्छी बात है ।

(चमेली के पास ही जाकर बैठता है)

चमेली—घो लिपटे क्यों जा रहे हो ?

राजा—लिपट ही जाऊँगा तो क्या हर्ज है ! यहाँ हम
दोनों के सिवा और कोई तो है नहीं ।

चमेली—अगर कोई आ पड़े !

राजा—कौन आ पड़ेगा ! रानी तो हैं ही नहीं, जिनका
खटका था ।

चमेली—नहीं जी, अब मुझसे हेल-मेल बढ़ाकर क्या
होगा ? मैं तो कल अपने बाप के घर जा रही हूँ ।

राजा—(चौंकर) ऐं ! यह क्या !

चमेली—अब मेरा यहाँ रहना ठीक नहीं जँचता ।
मुझे यहाँ आए कितने दिन हो गए !

(राजा की ओर अनुरागपूर्ण दृष्टि से देखती है)

राजा—मैं तुम्हें छोड़ूँगा तब तो जाओगी ।

(हाथ पकड़ता है)

(अलक्षित भाव से किशोरसिंह का प्रवेश)

किशोर—(देखकर स्वगत) हूँ ! देखता हूँ, राजा के साथ चमेली का बहुत हेल-मेल बढ़ गया है । हज़ार हो, औरतों की जाति का स्वभाव कहाँ जायगा । दुनिया में ये औरतें सिर्फ़ दौलत को ही सब से बढ़कर समझती हैं । लेकिन इस खूमट को क्या सूझी है ! और, ज़रा छिपकर देखूँ तो सही, कहाँ तक नौबत पहुँचती है ।

(आड में छिप जाता है)

चमेली—नहीं जी, दीदी की भी इच्छा नहीं है कि मैं अब यहाँ रहूँ ।

राजा—नहीं, तुम्हारा जाना हो ही नहीं सकता ।

चमेली—नहीं, मुझे जाना ही होगा । आज रानी ने मेरा बड़ा अपमान किया है । कहा कि राजा के घर के छप्पन भोग खाकर अब तुम्हें वाप के घर की दाल-रोटी क्यों रुचेगी ? (आँसों में आँसू आने का ढाग दिमाकर) मैं जैसे तुम्हारे यहाँ खाने-पीने के लिये ही आई हूँ ।

राजा—रानी की इतनी मजाल ! रानी क्या अपने

धाप के घर से लाकर तुमको खिलाती-पिलाती है ? तुम मेरा खाती पीती हो, उसमें उसका क्या है ?

(पास एक शब्द होता है)

राजा—(चौककर) यह क्या है !

चमेली—वह और कोई नहीं, विल्ली है। उसी की कूद-फाँद का कुछ खटका हुआ है।

राजा—चमेली तुम्हें मेरे सिर की कसम, जाना नहीं।

चमेली—छी छी, अपने सिर की कसम न रखाना। मैं कल तो ज़रूर ही जाऊँगी।

राजा—(दीन भाव से) तुम चली जाओगी तो मेरा क्या होगा चमेली !

चमेली—सो मैं क्या जानूँ ?

राजा—ना, दोहाई है चमेली, तुम न जाना।

चमेली—खैर, अब आप इतना कह रहे हैं, इससे कुछ दिन और न जाऊँगी।

राजा—बस बस। तुमने मुझे जिला लिया। खुशी के मारे मेरा नाचने को जी चाहता है। (नाचता है) तो फिर चमेली—

चमेली—क्या ?

राजा—एक—(चुवन चाहता है)

चमेली—आ ! क्या करते हो (हट जाती है)

(राजा पीछे-पीछे जाकर उसका हाथ पकड़ता है)

राजा—आहा तुम्हारा हाथ कैसा नरम है चमेली !

चमेली—रानी के हाथ से बढ़कर ?

राजा—कहाँ तुम्हारा हाथ, कहाँ रानी का हाथ ! तुम्हारा हाथ जैसे कमल का फूल है और रानी का हाथ जैसे इंट है ।

चमेली—(बनावटी लज्जा का भाव दिखाकर) आप खुशामद की बातें करना खूब जानते हैं ।

राजा—खुशामद नहीं चमेली, मच कहता हूँ । वैसा नरम हाथ है ! जान पड़ता है, तुम्हारे और अग इसमें भी मुलायम हैं । (लिपटना चाहता है)

चमेली—अरे अरे, आप यह कर क्या रहे हैं ?—

राजा—प्राणेश्वरी !—(चुबन)

चमेली—अरे दौड़ो दौड़ो ! मार डाला—

(रानी मसहरी के पीछे से एक लंबी तक्रिया लिए निकलती है और राजा की पीठ पर धमाधम जमाती है । उबर किशोर भी एक लंबी लाठी लेकर राजा की ओर झपटता है)

राजा—ऐं-ऐं-ऐं यह क्या—तुम-तुम-तुम हो !

रानी—हाँ-हाँ-हाँ मैं-मैं-मैं हूँ ! (मारती है)

राजा—रानी, तुम समझीं नहीं ? मैंने बहनोई के नाते से चमेली को प्यार किया था । (चारा ओर भागता है)

रानी—और शायद दादा के नाते से लिपटाया था !

(राजा के पीछे-पीछे दौड़ती और मारती

पर्दा गिरता है

दूसरा अंक

पहला दृश्य

स्थान—अंतःपुर

(चमेली और रानी)

चमेली—क्यों जी देख लिया ?

रानी—हाँ देख लिया । ये मर्द सब कुछ कर सकते हैं !

चमेली—तुमको तो विश्वास ही नहीं होता था ।

रानी—सचमुच मेरा जी चाहता है कि गले में फंदा लगाकर मर जाऊँ ।

चमेली—तब तो फिर बूढ़ा कल ही एक और व्याह कर लेगा ।

रानी—सच ? मगर मुँह से तो कहता है कि मेरे मरने पर कभी और व्याह नहीं करेगा । एक टफा मरकर देखो वो जी चाहता है कि वह सचमुच व्याह करता है कि नहीं ! यह मैं जानती हूँ कि वह व्याह जरूर करेगा, तो भी एक टफा मरकर देखने को जी चाहता है ।

चमेली—देखने से क्रायदा ?

रानी—एक तरह का सुख मिलेगा ।

चमेली—क्या सुख मिलेगा ?

रानी—चोर को माल समेत पकड़ने में मिपाही को जो सुख मिलता है, वही सुख मिलेगा ।

चमेली—तो तुम यह तमाशा देखना चाहती हो ?

रानी—चाहती तो जरूर हूँ, पर देख कैसे सकती हूँ ?

चमेली—मरकर देखो ।

रानी—मरकर भी कहीं फिर देना जा सकता है ?

चमेली—मैं क्या तुमसे सचमुच ही मरने के लिये कहती हूँ । हम लोग यह खबर उड़ा देंगी कि तुम मर गई हो ।

रानी—लेकिन इस तरह एकाएक मरने पर बूढ़ा विश्वास क्यों करेगा ?

चमेली—क्यों नहीं विश्वास करेगा । वह मामूली बेचकूत नहीं है । डाँक्टर से क्या तुम नहीं कहला सकती हो कि तुम्हारी मौत हो गई ? डाँक्टर के कहने से राजा को क्रौरन् विश्वास हो जायगा ।

रानी—हाँ डाँक्टर से तो कहला सकती हूँ । अन्ध्रा मान लो कि मैं इस तरह मर गई । उसके बाद ?

चमेली—उसके बाद कुछ दिन तुम मेरे बाप के यहाँ छिपकर रहना । फिर देखना, क्या होता है । अच्छी

बात है। जुम यह देखना चाहती हो—देखो। वह लो, तुम्हारा पोता आ रहा है। अब मैं जाती हूँ।

रानी—जाती क्यों हो ? वह तो कोई गैर नहीं है।

चमेली—तुम्हारा गैर नहीं है। मेरा कौन है ?

(प्रस्थान)

रानी—किशोर के साथ चमेली का व्याह हो तो बड़ा अच्छा हो। दोनों की इच्छा यही है। मगर मारे शरम के कोई कह नहीं सकता। (किशोर का प्रवेश)

किशोर—दादी !

रानी—क्यों किशोर ?

किशोर—यहाँ बैठकर सबकु याद करने आया था। सो सबकु क्या याद करूँगा, आपको देखकर जो कुछ याद किया था वह भी भूल गया।

रानी—हाँ !—अच्छा मेरा एक काम कर दोगे ?

किशोर—क्या ?

रानी—तुम जाकर डॉक्टर को हम बात पर राज़ी कर दो कि वह कह दे—मैं मर गई हूँ।

किशोर—यह कैसे ?

रानी—मेरा मरने को बहुत जी चाहता है।

किशोर—तो डॉक्टर को हमके लिये क्यों राज़ी करना होगा ?

रानी—डॉक्टर राजा से कह दे कि मैं मर गई हूँ !

किशोर—मगर डॉक्टर ऐसी झूठी बात क्यों कहेगा ?

रानी—वह झूठी बातें हजारों कहा करता है। दस-पाँच रुपए देने से तोंते की तरह जो कहोगे वही कह देगा।

किशोर—ना, यह काम मुझसे न होगा। मैं डॉक्टर को घूस देकर उससे झूठ क्यों कहलाऊँगा ?

रानी—तुम्हारा भी एक फायदा करा दूँगी। तुम अगर यह काम कर दोगे तो चमेली के साथ तुम्हारा व्याह करा दूँगी। समझे ?

किशोर—(सिर झुकाकर) मगर वह भी राज़ी हो तब तो ।

रानी—इसका ज़िम्मा मैं लेती हूँ ! अब बताओ, तुम यह काम करने के लिये राज़ी हो ?

किशोर—राज़ी हूँ ।

रानी—(हँसकर) सो तो मैं पहले ही से जानती थी। अच्छा तो अब जाओ। (रानी का प्रस्थान)

किशोर—तमाशा तो बुरा नहीं है ! औरतों को बहुत तरह की साधें होते सुना जाता है, लेकिन मरने की साध एकदम नई बात है। हाय ! ऐसे चंचल स्वभाव-वाली जाति से भी व्याह करने के लिये ये मर्द पागल हो उठते हैं ? मगर औरतों से व्याह करना अप्रियों की चलाई पुरानी चाल है—मानना ही पड़ता है। (प्रस्थान)

दूसरा दृश्य

स्थान—राजा की बैठक

(राजा के मुसाहब लोग)

मथुरा—अब तो भई नौकरी नहीं हो सकती ।

राधे०—ठीक कहते हो ।

कुज०—बहुत से रहस्यों की मुसाहबत की है, लेकिन ऐसे कोरे अहमक से कभी काम नहीं पडा ।

वनवारी—सच है भाई, इतनी खुशामद करो, मगर फायदा कुछ नहीं होता ।

कुज०—क्या कहूँ भाई, इतने दिनों तक art के हिस्सा मे खुशामद की study की गई । लेकिन यह राजा माला एकदम मूर्ख है । कुछ समझता ही नहीं । आज से बस साफ-साफ जवाब है ।

राधे०—अरे भई जरा धीरज धरो ।

कुज०—धीरज जाय चूल्हे में ।

मथुरा—दुख और कुछ नहीं, यही है कि साले ने appreciate नहीं किया ।

वनवारी—माला यह नहीं समझता कि पाँच रुपए महीने में भले आदमी का गुज़र नहीं होता ।

राधे०—अजी ऊपर से भी तो है ।

वनवारी—ऊपर से क्या है ?

राधे०—यही बराडी—द्विस्की बगैरह ।

मथुरा—बराडी—द्विस्की तो ठीक है । बगैरह क्या है ?

कुज०—अजी राधेजाल तुम्हारी बात पर मुझे एक पुरानी रवायत याद आ गई ।

राधे०—वह क्या ?

कुज०—यही, एक गवैये उस्ताद को एक सूम के घर गाने का बयाना मिला । उस्तादजी अफीमी थे । रात-भर सूम की महफ़िल में चिह्लाकर उस्तादजी घर आए तो उनकी जोरू ने पूछा—कितने रुपए का करार था ? उस्ताद ने कहा—१४) रुपए, १४) रुपए । जोरू ने पूछा—कितने रुपए पाए ? उसने कहा—लगभग सभी रुपए मिल गए हैं । जोरू ने कहा—कहाँ हैं ? मियाँ बोले—ये सात रुपए लो, बाक़ी सात के लिये झगडा चल रहा है । जोरू ने कहा—तब तो कहो, सभी मिल गया; और ऊपर से ? तब उस्ताद ने गाल पर जूते के निशान दिखाकर कहा—यह देख लो । सूम ने गवाकर जूते मारकर गवैये को निकाल दिया था । हम लोगों की यह 'ऊपर से' भी वैसी ही है ।

मथुरा—खूब कहा, खूब कहा भैया, साला इसी तरह का आदमी है ।

बनवारी—फिर इसका उपाय क्या है ?

राधे०—उपाय और क्या है ? बैठे-बैठे “बैठे की बेगार” टाली जाय । जो मिल जाय वही सही ।

कुंज०—तुम लोग बेगार टालो । अब की मैं ‘दो टूक’ करके लवा होता हूँ । उमर भी ढल आई , अब नौकरी नहीं निभ सकती ।

राधे०—तुम्हें भांडं काहे की चिंता है ! तुम्हारे तो अब लड़के-बाले हैं नहीं ।

बनवारी—तुम तो बीच-बीच ‘दो टूक’ करने में कसर नहीं रखते ।

कुंज०—अरे वह भी तो खाक उस साले की समझ में नहीं आता । यही तो दुख है । साला समझता तो अब तक मुझे अर्धचंद्र (गरदनिया) दिलवाकर निकाल देता । उससे कुछ तो जी को सतोप होता कि मैंने जो भला-बुरा कहा उसे साले ने समझ लिया ।

राधे०—चुप रहो जी, चुप रहो जी ! साला धा रहा है ।

(राजा का प्रवेश)

राजा—हैं हैं हैं हैं हैं ।

मुसाहब—(साथ ही साथ) हैं हैं हैं हैं हैं ।

कुंज०—चि हिं हिं हिं हिं ।

राजा—बड़े मजे की बात है, हैं हैं हैं हैं हैं ।

मुसाहब—(साथ ही साथ) बड़ी—हैं हैं हैं हैं हैं ।

राजा—क्यों जी कुंज, आज बहुत घोड़े की तरह हिन-हिना रहे हो ?

कुंज०—गधे की बोली भूल गया हूँ ।

राजा—जानते हो मथुरा, कल नई रानी ने क्या कहा ?

मथुरा—क्या कहा राजा साहब ?

राजा—कहा, राजा साहब, इन कई एक गडब्रों को महीना देकर क्यों पाल रक्खा है ? गोशाले में भेज दो, या छोड़ दो, जाकर चरें । हँ हँ हँ हँ हँ ।

मुसाहब—हँ हँ हँ हँ हँ, बड़े मजे की बात तो है राजा साहब ।

राजा—जानते हो बनवारी, मैंने इसका क्या जवाब दिया ?

बनवारी—ना, सो तो ठीक-ठीक नहीं जानता ।

राजा—मैंने जवाब दिया कि रानी, मैं श्रीकृष्ण हूँ, और तुम राधिका हो—तुम्हारी सखियाँ गोपी हैं । यह सब तो ठीक हुआ—मुसाहबों को गज समझ लो ! हँ हँ हँ हँ हँ ।

कुंज०—(गाता है)

रहै वा वृंदावन की याद ,

भूलत नहीं गोपी, गो, गोकुल वा गोरस को स्वाद ।

राजा—यह क्या कुंज, तुम तो गाना गाने लगे ।

कुंज०—यह रासलीला हो रही थी न ? मैं समझ कि आप गोचारण-लीला का स्वांग कर रहे हैं ।

राजा—(हँसकर) तुम सचमुच भाँड़ ही हो ।

कुञ्ज०—हम लोग गरीब आदमी ठहरे । हुजूर के ऐसे भले आदमी होना हमें कहीं नसीब हो सकता है ।

राजा—जाने दो—तुम्हारे मसखरेपन में मैं, न-जाने क्या कह रहा था, भूल गया । क्या कह रहा था बनवारी ?

बनवारी—हाँ यही (राधेलाल से) बताओ न जी ।

राधे०—हाँ वह यही (मथुरा से) बताओ न जी मथुरा ।

मथुरा—वही रानी की बात ।

राजा—हाँ हाँ, ठीक है—ठीक है । मथुरा की याददाश्त बहुत तेज़ है ।

राधे०—ऐसी जँसे राजिस की छुरी ।

राजा—मुझे सब बातें याद ही नहीं रहतीं ।

राधे०—यही तो ऐव है ।

मथुरा—ऐव ? राजा साहब का ऐव ?

राजा—नहीं जी मथुरा, वह ऐव ही है ।

मथुरा—ऐव ! बड़ा भारी ऐव है ।

राजा—देखो बनवारी, मुझमें यही एक ऐव है ।

बनवारी—और सब गुण हैं ।

राजा—नहीं तो हालीं कि उमर कुछ जगाद हो गई है ।

राधे०—तो उमर अभी आपकी ऐसी दया ज्यादा हुई है राजा साहब ।

राजा—ना, कुछ ज्यादाह क्यों नहीं हुई है ।

राधे०—यों ही कुछ ।

राजा—तो भी अभी मेरे वदन में ताकत है ।

(राजा अपना हाथ बढाकर दिखाता है । सब लोग हाथ दबाकर देखते हैं और हाथ-पैर-मुँह मटकाकर विस्मय का भाव दिखाते हैं)

राजा—उमके बाद विया में—

वनवारी—एकदम साक्षात् बृहस्पति हैं ।

राजा—और भलमनसी में—

मथुरा—धर्मपुत्र युधिष्ठिर हैं ।

राजा—और हालों कि मैं इधर ज़रा—समझे कि नहीं—लेकिन तो भी कौन साला कह सकता है कि मैंने किसी का कुछ चुराया है, या किसी का कुछ ठग लिथा है, या कुछ जाल किया है ?—कौन कह सकता है ?

कुज०—किसकी जान फालतू है ?

राजा—देखो—(गाना)

बहादुरी की बड़ी बटाई किया ही करता था रामरतना,
मुसा०—लगा के दम या तो ताटी पीकर, बहकता होगा हुजूर इतना
राजा—वो ऐठता खूब, ढीठ उस दिन लडाई लडने को आया हमसे,
मुसा०—हुजूर, इतनी मजाल उसकी! उडाही देना था उसको बम से।
राजा—रुहा यों मैंने, अब तो आ जा, मैं देखूँ—कैसा है तू बहादुर !

लिपट के उसने पटक दिया, तब हुआ मैं आपमें अपने दाह ।

अजीब गुस्से से हाल मेरा हुआ, लगा काँपने मैं धर-धर,

चहा कि दो-चार हाथ मैं भीजमा दूँ उसके या फोट दूँ मर ।

मगर समझकर उसे कमीना, बरा गया रार, बाध धोता ,

मुसा०—किया बहुत ठीक यह, नहीं तो जरूर ही मार-काट होती ।

राजा—कंदार साला—वही रिजाला—बटा भगतपन की ढोल पीट ।

मुसा०—अजीबही, हाँ, चचा था जिसका हरामजादा भगत घर्नाट ।

राजा—लिप ये उससे हजार रुपए, वो माँगने एक रोज आया ,

मुसा०—ये देखिए, कमवखत है कैसा, हुजूर का भी न माँफ़ मागा ।

राजा—तटपके मैंने कहा—अबे जा! तू ककता क्या है नशा पिया । ?

ये कैसे रुपए ? है किसके रुपए ? बना हुआ तू किमारिगा ? !

मुकदमा कर, अगर है सच्चा, न एक कच्चा मुझे दिया है ,

सुअर का बच्चा! लफग तुचा! मुझे भी टुप्पा समझलिया । ?

चला गया, गान गिर पड़ी ज्या, उदास होकर कंदार घर पो,

वो लेके रुपए कर ही गा क्या ? उठा ही देगा जरूर जर का ।

इसीने गन धता बताई—

मुसा०— हुजूर, साला हुआ है बाही !

जिया बहुत ठीक, कौन देगा कंदार की ओर से गवाही ?

राजा—गनेस—वह छोरारा—वही जो वकील अब की हुआ है साला !

बना है विद्वान, हर जगह पर रखा चहे अपनी बात वाला ।

मुसा०—हह हह ह । गनेस ? ह ह । गनेस भी आदमी है कोई ?

राजा—वहस को आया था पास मेरे, जेहे “न मुझमें कमी है कोई ।”

मुसा०—अजीबोअहमक है, कोराअहमक। नमकट्टरामी है उसका पेशा,
 राजा—विगडके मैंने कहा, तो आ जा, हम-हमी क्या कर हमेशा ?
 जहाज हूँ, खान हूँ इलम की, समझ लिया क्या है तूने मुझको ?
 चटक-मटक सब धरी रहेगी, अभी पटक दूँगा देख तुझको !
 लपक के दो लाठियाँ लगा दूँ जो पीठ पर मैंने घम-वमाघम,
 तो गिर पडा चित—

मुसा०— उचित यही था, हुजूर यह दी सजा बहुत कम।
 राजा—उठा तो भागा वो जान लेकर उसे खबर थी न मेरी रिस की,
 मुसा०—प्रमाण लाठी है तर्क में भी, है मेस उसकी है लाठी जिसकी।
 (डॉक्टर भगवती का प्रवेश)

राजा—वह तो डॉक्टर साहब आ गए।—क्यों जी
 रानी कैसी हैं ?

भगवती—खूब हैं।

राजा—खूब का क्या मतलब ?

भगवती—उनका मतलब खूब याने अच्छा है।

राजा—उनका क्या मतलब है ?

भगवती—मतलब यही है कि वह कुछ दिनों में राजा
 साहब को एक लडका या लडकी उपहार देंगी।

राजा—कहते क्या हो ! सच !

भगवती—नहीं तो क्या आप झूठ समझते हैं ? मैं
 क्या झूठ कह सकता हूँ। आप जानते हैं राजा साहब,
 इन नसों में प्रतापकुश्रि का खून है।

कुज०—बापरे !

राजा—देखते हो राधेलाल । तब भी माले धूँड़ा कहते हैं !

भगवती—Libel ! राजा साहब की उमर छी अर्भी क्या होगी ।—मैं बताए देता हूँ । अपने दाँत दिखाइए, राजा साहब ।

कुज०—राजा साहब बेल या घोड़ा हैं, जों दाँत देगपर उमर बताओगे ।

राजा—ना ना, देखो ना । (दाँत दिखाता है)

भगवती—वही तो, ऐसा अचरज तो मैंने कभी देखा ही नहीं ।—राजा साहब आपकी उमर यही पर्याप्त के लगभग होगी ?

कुज०—(स्वगत) देखता हूँ, यह सुशामद में भी उल्लाह है !

राजा—(संतोषसूचक स्वर में) नहीं डॉक्टर साहब, इससे अधिक है ।

भगवती—दाँत देखने से तो अधिक नहीं जान पड़ती ।

कुज०—दाँत देखकर तो उमर आपने ठीक कर ली डॉक्टर साहब, लेकिन आप क्या जानें, ये दाँत खनली हैं या नखली ?

भगवती—नखली ही हैं । मैंने भी तो ठीक यही सोचा था । (कुजविहारी से) साहब जान पड़ता है आपने

Addison's Historical Synthesis of Teeth नहीं पढ़ा ।
 पढ़िएगा । बहुत ऊँचे दर्जे की किताब है । (घड़ी देखकर)
 ओ दम बज गए ! अब जाता हूँ । राह में राजा की
 लॉरी को देखकर जाना होगा । उसे concatenation of
 the right abdomen होकर case ज़रा complicated
 हो गया है । उसका इलाज करने में कसर नहीं रखूँगा ।
 (व्यस्तभाव से प्रस्थान)

राजा—देखते हो बनवारी ! देखते हो !

बनवारी—उ. !

राजा—इस समेत मेरे पंद्रह लड़के-बाले हुए । समझे
 राधेलाल । पं—द—र—ह । राधेलाल के कै लड़के-
 बाले हैं ?

राधे०—यही सब मिलाकर ग्यारह ।

राजा—और मथुरा के ?

मथुरा—अजी साहब ! वह दु ख की बात क्यों पूछते
 हैं ! सिर्फ़ तीन ।

राजा—सिर्फ़ तीन ! हाः हा हा. ! तुम कुछ भी नहीं
 कर सके । बनवारी के कै हैं ?

बनवारी—सात, बस ।

राजा—तुम्हारा नवर कुछ बुरा नहीं है । कुज के शायद
 लड़के-बाले नहीं हैं ?

कुज०—जी नहीं । चार थे, चारो मर गए ।

राजा—फिर ब्याह क्यों नहीं करते? फिर लड़के वाले होंगे।

कुंज०—अब कहीं इस उमर में लड़के हो सकते हैं राजा साहब ?

राजा—क्यों ! मेरे होते हैं, तुम्हारे क्यों न होंगे ?

कुंज०—आपकी यात और है । राजा साहब के कितने ही आदमी मददगार हैं । मैं गरीब आदमी अकेला ठहरा ।
(नौकर का प्रवेश)

नौकर—राजा साहब !

राजा—क्या है रे !

नौकर—राजा साहब ! रानी जी—

राजा—क्या हुआ ?

नौकर—रानी जी—

राजा—रानी जी रानी जी क्या कर रहा है ? समझे घनवारी, यह रानी के बारे में वही खबर देने आया है ।
छरे रानी जी क्या ?

नौकर—रानी जी नहीं हैं ।

राजा—क्या बक रहा है !

नौकर—जी ।

राजा—कहाँ चली गई ?

नौकर—क्या बताऊँ । इस दुनिया में नहीं हैं ।

राजा—मर गई ?

नौकर—जी हाँ ।

राजा—सच ?

नौकर—जी ।

राजा—यह तू कहता क्या है ?

नौकर—जी ।

राजा—अभी तक तो जीती थीं ।

नौकर—जी हाँ जीती थीं ।

राजा—अब मर गई ?

नौकर—जी ।

राजा—यह हो ही नहीं सकता । क्यों जी राधेबाल ?

राधे०—सो तो है ही ।

राजा—रानी कहीं मर सकती हैं ? क्यों जी कुंज ?

कुंज०—रोज़ आता-जाता हूँ, रानी मर गई—ऐसा तो कभी नहीं सुना ।

राजा—मथुरा, क्या कहते हो ? इस तरह एकाएक कुछ कहे-सुने बिना—

मथुरा—हो ही नहीं सकता ।

राजा—आर मर भी सकती है ।

मथुरा—मरने में क्या देर लगती है ?

राजा—अच्छा बनवारी, भीतर जाकर देखने ही से सब हाल अभी मालूम हो जायगा ।

बनवारी—जी हाँ, यह भी ठीक है । (सब का प्रस्थान)

तीसरा दृश्य

स्थान—रास्ता

(भगवती अकेला)

भगवती—राजा के family physician होने में फायदा तो बढ़ा भारी है ! साल में ३०॥) रुपए ! इतने में भला किसी भले आदमी का गुजर हो सकता है ? आजान पड़ता है, चूल्हे पर हाँडी नहीं चढ़ेगी । किसी तरह private practice जमा नहीं पाता । शहर में जूनी दुखार का नाम नहीं है । होता भी है तो फॉन उमड़ा खाल करता है । कहीं डॉक्टर को न बुलाना पड़े । पोंई साला रोगी घर पर नहीं बुलाता—फ्रीम न देनी पड़ेगी । खेराती दवा सब ढूँढते हैं । देखूँ, अगर रास्ते में कोई रोगी पकड़े मिल जाय । वह एक खूब हटा-कटा मोटा-ताज़ा आदमी जा रहा है । जनाव, जनाव, अजी ओ जनाव !

नेपथ्य में—क्या है ?

भगवती—ज़रा इधर आइए तो ।

(एक मोटे-तान भल-चंगे आदमी का प्रवेश)

वह—क्यों साहब ?

भगवती—मैं कहता हूँ (खोसता है) मैं कहता हूँ (रॉमिता है) मैं कहता हूँ आप अच्छे तो हैं ?

वह—(क्षोभित होकर) क्यों साहब यह बात पूछने

के लिये मुझे कोस-भर से न पुकारते तो क्या कुछ आपका दर्ज था ? आप तो अच्छे आदमी देख पड़ते हैं ।

भगवती—आप नाराज क्यों होते हैं ? आप शायद मुझे पहचानते नहीं हैं । मैं एक डॉक्टर हूँ ।

वह—होंगे डॉक्टर ।

भगवती—कुछ खयाल ही नहीं करते ? अच्छा आप का हाथ देखूँ । (नाटी देखकर) यह क्या, आपके typhoid fever हो गया है । ज्वरदस्त ज्वर है ! विकार है ।

वह—ज्वर क्यों होने लगा जी !

भगवती—मैं कहता हूँ, होते क्या देर लगती है ?

वह—जाइए, राह छोड़िए ।

भगवती—अजी सुन लीजिए । जानते हैं, मैं राजा साहब का family physician हूँ । जान पड़ता है, अपने Emerson's History of Lingna Capsus नहीं पढ़ी ?

वह—यह कहाँ का गधा है !

भगवती—कहते क्या हैं ? आप जानते हैं, इन नमों में रानी प्रतापकुँवरि का खून—

वह—जाइए । (गुस्से से प्रस्थान)

भगवती—साले ने कुछ खयाल ही नहीं किया । ऊपर से अपमान कर गया । होने दो । अब मैं नाछोड़वाँदा हूँ । वह एक औरत आ रही है । देखूँ, वह क्या कहती है । सुनो (खँसता है) अजी ! (खँसता है)—(स्वगत) अरे

कुछ समझ में नहीं आता कि क्या कहकर पुकारूँ—
(प्रकट) सुनो (खाँसता है) अजी—फूलाने की मा !

(एक स्त्री का प्रवेश)

भगवती—बुआइनजी !

औरत—तू कौन है पाजी हरामजादे गिरहकट—

भगवती—अरे सुनो तो—

औरत—मर मुर्दे खूसट—कहती हूँ, राह छोड़ दे ।

(प्रस्थान)

भगवती—यह औरत तो जैसे आदमियों में रहती ही नहीं है । बात भी नहीं सुनी, और इतनी बातें सुना गई ।
लो वह माधव बाबू आ रहे हैं । (माधव का प्रवेश)

भगवती—अच्छे तो हो; कहाँ चले ?

माधव—न्याँता खाने ।

भगवती—गज़ब करते हो । एक दवा पी लो, तब जाओ । आज कल जोर जोर से diarrhoea फल रहा है ।—न्याँता खाते ही diarrhoea का खटका है ।

माधव—कहते क्या हो । तो क्या न्याँता खाने न जाऊँ ?
लेकिन न जाने से बहुत नाराज़ होंगी । मौसेरी बहन हैं ।

भगवती—मौसेरी बहन हैं ? सच ? आज कल मौसेरी बहन के यहाँ न्याँता खाते ही एकदम cholera हो जाता है; फूफेरे भाई के यहाँ न्याँता खाने जाते तो उतना दर्द न था ।

माधव—तो फिर क्या लौट जाऊँ ?

भगवती—लौट क्यों जाओगे ? एक दवा खाए जाओ, फिर कुछ डर नहीं है । R n Johnson's Materia Medica में लिखा है—

माधव—ना ना, दवा अब न खाऊँगा । ज्वर कालरा होने का सूटका है, तब एकदम न्यौता न खाना ही अच्छा । लौट ही जाऊँ ।

भगवती—अरे सुनो तो ।

माधव—नहीं जी ! तुमने ठीक कहा । ऐसी गरमी में न्यौता खाना कुछ नहीं है । (लौट जाता है)

भगवती—कैसी छोटी तबीयत का आदमी है ! न्यौता खाना छोड़ देगा, मगर तो भी दवा न खायगा । सभी चाहते हैं कि डॉक्टर को कुछ न देना पड़े !—ये और कौन लोग आ रहे हैं ? कुछ स्कूल के लड़के देख पड़ते हैं ।
(कुछ लड़कों का प्रवेश)

१ लड़का—हाँ सुरेंद्रनाथ बनर्जी अभी विपिनचंद्र को बहुत दिनों तक सिखा सकते हैं ।

२ लड़का—रहने दो अपने सुरेंद्र बनजा को ।

३ लड़का—अरे नहीं जी, सुरेंद्र बाबू बोलते खूब हैं ।

४ लड़का—विपिनचंद्र से बढ़कर ? (पाँचवें लड़के से)
क्यों जी !

५ लड़का—(गभीर स्वर से) हाँ विपिनचंद्र का,

diction अच्छा है और सुरेंद्र बाबू का style अच्छा है ।

भगवती—अरे ओ लडको ! इतना क्यों चिन्ता रह हो ?
तुम्हारे घर में क्या कोई बीमार नहीं है ?

लडके—जी नहीं ।

१ लडका—लेकिन तो भी सुरेंद्र बाबू—

भगवती—सुनो तो, तुम्हारी बुआ के तपेदिक
नहीं है ?

२ लडका—No Sir !—मगर विपिनचंद्रपाल—

भगवती—(और लडके से) अजी तुम्हारी मामी को
समझती हो गई थी, तो अच्छी हो गई ?

४ लडका—मेरे मौसी नहीं है ।—हालांकि सुरेंद्रनाथ
बनजी—

भगवती—मौसी नहीं है ? (और लडके से) अजी
तुम्हारा नाम चट्ट है—स्यों ?

३ लडका—जी नहीं, मेरा नाम मोहन है ।—मो चाहे
जो कहो, विपिनचंद्रपाल—

भगवती—हाँ-हाँ मोहन ही है । (और लडके से) ओ
लडके ! तुम्हें Bronchitis हो गया है ?

५ लडका—Bronchitis क्यों होगा ? मूर्ख, पाजी,
गवार, उल्लू—

भगवती—अरे भाई, Bronchitis नहीं हुआ तो न
सही, गालियाँ क्यों देते हो भैया ?

लड़के—गालियाँ देंगे, पूँव देंगे । गालियाँ देना ही हमारा रोज़गार है ।

भगवती—गालियाँ देना ही रोज़गार है ? इसमें कुछ नफ़्ता होता है ? बताओ, न हो डॉक्टरी छोड़कर यही रोज़गार शुरू कर दूँ ।

१ लड़का—हम लोग सपाटक होंगे ।

भगवती—ओ ! सच ? तो फिर दो भैया, सूँव गालियाँ दो ।

२ लड़का—आप लेक्चर देना जानते हैं ?

भगवती—नहीं भैया, मैं डॉक्टरी करता हूँ ।

३ लड़का—डॉक्टरी ? फ़क़्त ?

भगवती—क्यों, क्या डॉक्टरी कुछ काम की ही नहीं है ?

४ लड़का—अब्रव्वार के लेखक भी नहीं हो ?

भगवती—ना ।

५ लड़का—तो तुमसे देश का उद्धार न होगा । जाइए, खिसकिए ।

(लड़कों का प्रस्थान)

भगवती—सालों को ज़रा कालरा हो । देखूँ, इनके सुरेंद्रनाथ क्या करते हैं और विपिनचंद्र ही क्या करते हैं । यहाँ अब डॉक्टरी करने से काम चलता नहीं देख पड़ता । देख पड़ता है, अब यहाँ से भी बोरिया-बसना समेटना पड़ेगा । हाय रे यमघंट-योग—

(किशोर का प्रवेश)

किशोर—अजी ओ डॉक्टर साहब, आपसे कुछ खास मतलब है ।

भगवती—क्यों ? क्या रानी को किसी सखी को दो-तीन छोंकें आई हैं, इसीसे उसे दवा देनी होगी ? तुम भैया और डॉक्टर देखो । मुझसे अब नहीं सपरेगा ।

किशोर—नहीं जी डॉक्टर साहब, एक बड़े मज्जे की घात है । आपको एक काम करना पड़ेगा । सुनिए ।

(कान में कुछ कहता है)

भगवती—यह कैसा मज्जा है भैया ? जीते आदमी को मैं कैसे मार डालूँगा ?

किशोर—आप भी बस वही हैं । मैं यह थोड़े कहता हूँ कि आप सचमुच रानी को मार डालिए । सिर्फ इतना कहना पड़ेगा कि रानी मर गई हैं ।

भगवती—ओ ! तो शायद तुमने Medical Jurisprudence नहीं पढ़ा ? False death certificate देकर क्या मैं अखीर को जेल जाऊँगा ?

किशोर—जेल क्यों जाइएगा ?

भगवती—अगर जाना ही पड़े तो ?

किशोर—मैं इसका ज़िम्मा लेता हूँ ।

भगवती—कैसे ?

किशोर—मैं कहता हूँ, आप जेल न जाइएगा । अगर जाइएगा तो कहिएगा कि “हाँ” ।

भगवती—तब “हाँ” कहकर मैं क्या कर लूँगा ?

किशोर—अरे भाई जेल कैसे जाओगे ?

भगवती—ना भैया, यह कुछ मेरी समझ में नहीं आता ।

किशोर—डॉक्टर साहब आप घबराते क्यों हैं ? यह तो सिर्फ एक दिल्लगी है ।

भगवती—तुम लोगों के लिये दिल्लगी होगी, लेकिन मुझे तो जेल जाने के सामान जुटाना दिल्लगी नहीं जान पड़ता ।

किशोर—अजी खाली दिल्लगी नहीं है । यह काम अगर आप कर सकेंगे तो आपको १००) रु० इनाम मिलेगा—समझें ?

भगवती—तुम भी अच्छे आदमी हो । पहले ही मैं कह देते, अब तक मैं समझ गया होता—अब सब मैं समझ में आ गया । भैया, बातचीत यहीं से शुरू कर ठीक होता है ।—मगर पेशगी मिलेगा न ?

किशोर—लीजिए—अभी ले लीजिए । (नोट देता है)

भगवती—वाह ! अब तो समझ एकदम झरू हो ग जान पड़ता है कि मैं Newton या Bismark या Gladstone का दूसरा अवतार हूँ । अच्छा हाँ, क्या कहना हो यही न कि रानी मर गई हैं ! यह कौन बड़ी बात उस दिन अभी बीस रुपयों के ज़ोर से रानी के गर्भ स

कर दिया था, तो क्या आज सौ रूप्यों के ज़ोर से रानी को मार न डाल सकूंगा ? मगर रानी के शरीर में मौत के सब लक्षण देख पड़ेंगे न ?

किशोर—सब लक्षण देख पड़ेंगे ।

भगवती—आर जी उठने के पहले उसकी खबर मुझे मिल जायगी ज़रूर ?

किशोर—हाँ ।

भगवती—अच्छा तो तयाम्तु । भैया हम डाक्टर हैं । रोगी को बचा सकें या न बचा सकें, लेकिन जीते हुए घादमी को मार डालने में कभी नहीं चूक सकते । भैया यह डॉक्टरी अद्भुत विद्या है ! जान पड़ता है, तुमने Napoleon's Vivisection of Living and Dead Organisation नहीं पढ़ा ? बड़ी विचित्र पुस्तक है ! बड़ी विचित्र पुस्तक है ! ज़रूर पढ़ो ।

(दोनों का विपरीत ओर से प्रस्थान)

चौथा दृश्य

स्थान—रानी के सोने का कमरा

(रानी और रानी की सखियाँ)

रानी—तो फिर सब ठीक है ?

जानकी—सब ठीक है ।

रानी—तो अब मैं मरूँ ?

जानकी—हाँ मरो ।

रानी—राजा आ रहे हैं ?

श्यामा—हाँ उनके पास तुम्हारे मरने की खबर :

रानी—तो फिर मरती हूँ !

सब—मरो ।

रानी—सुंदर !

सुंदर—क्या ?

रानी—मैं मर गई ।

सुंदर—तुम्हारा मरना ही अच्छा ।

रानी—सलोनी, रोओ तो ।

सलोनी—ठहर जाओ, ये पूरियाँ खा लूँ । (खाती)

रानी—श्यामा !

श्यामा—क्या ?

रानी—राजा ते कहना कि मैं मर गई ।

श्यामा—अगर पूछें—किस तरह ?

रानी—कहना, साँस अटक गई थी ।

श्यामा—बेशक यह नए ढंग का मरना है ।

रानी—अब मैं सिर से चादर ओढ़ती हूँ । वह :

आ रहे हैं, तुम सब खूब चिल्ला-चिल्लाकर रोओ ।

(सब तरह तरह से चीखकर रोती)

जानकी—हो राजा !

(राजा का प्र

सुंदर—हाय राजा !

श्यामा—अरे राजा !

राजा—क्या रानी मर गई ?

जानकी—मर गई ।

राजा—कैसे मरीं ?

सुंदर—साँस अटक गई ।

राजा—कब ?

सलोनी—अभी थोड़ी ही देर हुई ।

राजा—डॉक्टर आया था ?

श्यामा—उन्हें बुलाने आदमी भेजा गया, इसी बीच में रानी की आँखें ऊपर चढ़ गई ।

राजा—हूँ ।

जानकी—ऐसी मौत किसी ने देखी न होगी । दम-भर में सब खतम हो गया ।

सलोनी—ऐसी मौत किसकी होगी । सोने की चिड़िया टढ़ गई ।

सुंदर—ऐसी मौत किसकी होती है । राजा साहब, हाथ-पैर सब ठढ़े पड़े हैं ।

श्यामा—मुँह से धोल भी नहीं निकलता—ऐसी मौत सब की हो ।
(भगवती का प्रवेश)

राजा—लो डॉक्टर साहब तो आ गए । देखिए तो रानी मरी हैं कि नहीं ?

भगवती—(हाथ-पैर उठाकर, नाक-कान टटोलकर) बेशक मर ही गई। एकदम जान नहीं है। (सखियों से) कब मरीं?

जानकी—अभी-अभी।

भगवती—क्या हुआ था?

सुंदर—साँस अटक गई थी।

भगवती—ठीक है। रघुवश में लोलियराज ने लिखा है कि राजा युधिष्ठिर की स्त्री सूपनखा की ऐसी ही मौत हुई थी।

राजा—अच्छा चलिए। रानी के क्रिया-कर्म का इंतज़ाम किया जाय।

भगवती—चलिए। मगर रानी को जलाइएगा नहीं, बहा दीजिएगा। इस रोग में मरनेवाले को बहा देना ही चाहिए।

(दौना का प्रस्थान)

पाँचवाँ दृश्य

स्थान—भगवती का बैठकखाना

(श्यामलाल, भगवानदास, गगाधर और मोहनलाल शराब की बोतलें लिए पीते और नाचते-गाते हैं)

रसिया—सारंग

सब—खा लो पी लो जी-भर यारो, ज्वानी सारी बीती जाय।

श्याम०—किसको कब ताऊन दबोचे या हैजा हो जाय।

क्या जानें, कब इस पिंजड़े से यह चिड़िया उड

जाय ॥ खा लो० ॥

भगवान०—नाचो नाचो—

गगा०—ढालो ढालो—

मोहन०—ह ह ह ! ला ढाल ।

श्याम०—नैसे बीने बीत जान दे—

भगवान०—गाता है बेताल ॥ खा लो० ॥

गगा०—मरने पर जो होगा, होगा, क्या चिंता है यार !

मोहन०—तोड़ फुलाकर, चैन झुलाकर, चल तो चौक
बजार ॥ खा लो० ॥

श्याम० स्वामी सेवरु सब समान हैं, करके देख विचार ।

गगा०—हँसी-खुशी से मौज मना ले, मज ले पच-मकार ।

॥ खा लो० ॥

मोहन०—कौन लोमड़ी-सा है बैठा ?

श्याम०—अरे भाग रे भाग ।

भगवान०—कौन उटाता धूल और तू जाता है ? खा साग ।

॥ खा लो० ॥

गगा०—आहा हा हा !

मोहन०—आहो हो हो ।

श्याम०—ही ही ही !

भगवान०—चुपचाप ।

गगा०—बड़ा मजा ! बलिहारी ।

मोहन०—अपनी जरा चुटेया नाप ॥ खा लो० ॥

भगवान०—वाह वाह !

गंगाधर—Bravo !

मोहन०—Excellent !

श्याम०—तुम लोग आप ही गाना गाते हो और आप ही मगन होते हो ।

भगवान०—अच्छा तो एक बात कहूँ ?—कहूँ ? कहूँ ? कहूँ ?

गंगाधर—नहीं भाई, अब कुछ कहने की जरूरत नहीं है ।

भगवान०—क्यों न कहूँगा ? दो सौ दफ्ते कहूँगा । पाँच सौ दफ्ते कहूँगा ।

मोहन०—कभी नहीं । यह बात कभी नहीं होगी ।

भगवान०—अलबत कहूँगा । जरूर कहूँगा ।

मोहन०—चुप रहो साले ।

भगवान०—तुमने मुझे साला क्यों कहा ? तुमको साला कहने का मजाज़ क्या है ?

श्याम०—यह मोहन ने बेजा किया ।

भगवान०—बेशक बेजा किया—बहुत ही बेजा किया

गंगाधर—भगदा क्यों करते हो भाई ? (गाता है)

सा लो पी लो जी भर यारो,

ज्वानी यों ही बीती जाय ।

भगवान०—मगर इन्होंने साला क्यों कहा ?

मोहन०—अरे भाई जाने दो । ज़वान से निकल गया

या, ख़फ़ा क्यों होते हो ? यह लो कान पकड़ता हूँ ।

(अपने कान पकड़ता है)

भगवान०—तुम और चाहे जो कहो, साला क्यों कहा ?

(गाते-गाते भगवती का प्रवेश)

गजल—कच्वाली

ऐ दिल, मजा अगर तू कुछ चाहे जिंदगी का—

तो कर ले यार मेरे, अक़्त्यार यह तरीका ।

बस खोल 'काग' खट से, पी जा उँडेल भट से,

हिस्की हो या बरौंडी, आशिक हो इस परी का ।

गगाधर—लो भगवती भी आ गए । भगवती के बिना

महफ़िल ही नहीं जमती—मज़ा ही नहीं आता !

भगवान०—मेरे बाप को गाली दे लेने—मगर साला

क्यों कहा ?

(भगवती गाता है)

गजल—कच्वाली

ऐ दिल, मजा अगर तू कुछ चाहे जिंदगी का—

तो कर ले यार मेरे, अक़्त्यार यह तरीका ।

बस खोल 'काग' खट मे, पी जा उँडेल भट से,

हिस्की हो या बरौंडी, आशिक हो इस परी का ।

मम्भूमि इस जगत में मीठा कुआँ है मदिरा ,

इसके बिना, समझ लो, सब सुख है यार, फीका ।

दुनिया के झगड़ों के तूफान से बचोगे ,

पी लो जी एक कुब्जी, सब दुख मिटेगा जी का ।

है जी मजा 'वनारस', बोतल है रेलगाड़ी,
 दे दो चैयर्स हुरें। एजिन चले खुशी का।
 वडली का दिन है जीवन, जोरु हे घोर काली,
 हे अधिकार में यह रोज़ान चिंगा घी का।
 सफ़ोच लोक-लजा उड जायगी हृदय से,
 मट्टी में जाने की है यह राह—यह तरीका।
 सताप-शोक में जो आनंद चाहते हो—
 तो तुम पियो वरौंटी घर व्यान उर्वशी का।

मोहन०—मगर यह “निरामिष” क्य तक चलेगा?
 कलिया-कवाय, भेजा गुर्दा, मडली-चाप वगैरह मँगाओ न।

भगवती—सवर करो दादा। तुमने सुना नहीं कि
 सवर में मेवा फलता है।

भगवान०—मगर तुमने मुझे माला क्यों कहा?

गंगाधर—अच्छा गोपालसिंह कहाँ हैं? अभी तक
 नहीं आए।

भगवती—थोरे आते ह, आते हैं, इतनी जल्दी क्यों
 मचा रहे हो भाई?

श्याम०—मगर भाई गोपाल अपने बाप का अच्छा
 सपूत है। जैसे सुना कि उसके बाप ने एक बहुत ही
 खूबसूरत औरत टॉच मँगाई हे वैसे ही आप भी उस पर
 लट्टू हो गया। कहता था, आज किसी तरह उस औरत
 को यहाँ भी ले आवेगा।

गंगाधर—इसों को कहते हैं—“बाप का बेटा, सिपाही का घोड़ा । बहुत नहीं तो थोड़ा-थोड़ा ।”

(मोती और अन्य चार स्त्रियों के साथ गोपालसिंह का प्रवेश)

श्याम०—वह लो छोटे राजा आ गए ।

मोहन०—और धकेले नहीं आए, साथ में पाँच-पाँच राती हैं ।

गंगाधर—छोटे राजा, वह कौन है जिसका तुम जिक्र करते थे ? वही है न, जो बनारसी साड़ी ढाँटे हुए है ?

भगवती—वाह वाह । तुममें इतनी भी समझ नहीं कि देखकर पहचान लो ? सुना नहीं—एकरचंद्रस्तमो हति न च तारागणैरपि । (मोती के पास जाकर लिपट जाना चाहता है और वह धक्का दे देती है) क्यों, क्या मैं पसंद नहीं आया । देखो, ऊपर से मैं उतना चटकीला-चमकीला नहीं हूँ—मगर भीतर से बड़े ऊँचे दर्जे का आदमी हूँ । शेक्सपियर—

श्यामलाल—(भगवती को ढकेलकर) रहने दो शेक्सपियर । बरते क्या हो ? उन्हें दिक्र दियोँ करते हो ? तुम तो पड़े दीठ देख पड़ते हो ।

भगवती—मगर तुम भी तो बड़े शरमीले नहीं देख पड़ते ।

श्याम०—(मोती से) थजी थो-थो-माई दियर ।

गंगाधर—(श्यामलाल को हटाकर) चुप रहो सुन्नर ।

करते क्या हो ? क्यों हैरान करते हो ? (मोती से) अजी
ओ-ओ-माई डार्लिंग ।

मोहन०—हटो जी हटो (गगाधर को घक्का देकर)
क्या पाजीपना करते हो । (मोती से) आओ
रानी, तुम मेरे पास आओ । कोई तुमसे नहीं बोल
सकता ।

भगवती—यह हो ही नहीं सकता ।

भगवान०—(चिल्लाकर सब के ऊपर गिर पड़ता है)
अरे बाप रे ! मार डाला ! मार डाला !

सब—क्या है जी ! क्या हुआ—क्या हुआ ?

भगवान०—होगा और क्या ? अपने लिये जगह कर ली ।
Oh my derry derry darling ! (मोती को पकड़ता है)

गोपाल—अरे अरे यह करते क्या हो ? इसे छोड़ दो—
कहता हूँ ! तुम लोग इन चारों में से चाहे जिसे पसंद
कर लो । यह मेरी चीज़ है ।

भगवान०—तुम्हारी है या तुम्हारे बाप की ?

गोपाल—बाप की चीज़ मेरी ही चीज़ है ।

गगाधर—वाह वाह, कैसी logic है ।

मोहन०—अरे झगड़ा क्यों करते हो ? बारी-बारी से
मामला ठीक कर लो न ।

श्याम०—हाँ मैं भी तो वही कहता हूँ । द्रौपदी के
नहीं पाँच पति थे ।

भगवती—तुमने लाख बात की एक बात कह दी ।
रामायण की बात पर किसी को एतराज नहीं हो सकता ।
झगडा क्यों करते हो ? इन्हें नाचने दो—गाने दो । ज़रा
मज़ा होने दो । (मोती से)—

पुतरी मतिन रखव तोहें पलकन की आड माँ ,
तोहरे वदे हम आँखी माँ बैठक बनाईला ।

गोपाल—हाँ चल्कि यह अच्छा है । गाओ तो मोती,
एक गाना गाओ ।

मोती—मैं तो गाना नहीं जानती ।

गोपाल—फिर वही पाजीपन शुरू किया । गाओ ।

मोती—मेरी आवाज़ पढ़ गई है । मुझसे गाया न
जायगा ।

भगवती—अच्छा तुमसे न गाया जायगा तो न सही,
कुछ परवा नहीं । तुम्हारी ये साथिनें गावे । तुम इनके
साथ नाचोगी तो ? तुम्हारी आवाज़ पढ़ गई है, पैर तो
नहीं टूट गए ? (और औरतों से) गाओ जो गाओ ।

(चारों वेश्याओं का नाचना और गाना)

खयाल—विहाग

आँख खोलकर यार दूर से देखो हमको, मला यही ,
पड़ताओगे पास बहुत जो आओगे , हम कहें सही ।
हिलती-टुलती पन फैलाती काली नागिन हैं सब हम ;
जो बदकिस्मत हमसे लिपटे, उसको मारें कम से कम ।

करते क्या हो ? क्यों हैरान करते हो ? (मोती से) अजी ओ-ओ-माई डार्लिंग ।

मोहन०—हटो जी हटो (गगाधर को धक्का देकर) क्या पाजीपना करते हो । (मोती से) आओ रानी, तुम मेरे पास आओ । कोई तुमसे नहीं बोल सकता ।

भगवती—यह हो ही नहीं सकता ।

भगवान०—(चिल्लाकर सब के ऊपर गिर पड़ता है) अरे बाप रे ! मार डाला ! मार डाला !

सब—क्या है जी ! क्या हुआ—क्या हुआ ?

भगवान०—होगा और क्या ? अपने लिये जगह कर ली ।
Oh my derry derry darling ! (मोती को पकड़ता है)

गोपाल—अरे अरे यह करते क्या हो ? इसे छोड़ दो—कहता हूँ ! तुम लोग इन चारों में से चाहे जिसे पसंद कर लो । यह मेरी चीज़ है ।

भगवान०—तुम्हारी है या तुम्हारे बाप की ?

गोपाल—बाप की चीज़ मेरी ही चीज़ है ।

गगाधर—वाह वाह, कैसी logic है ।

मोहन०—अरे झगडा क्यों करते हो ? बारी बारी से सामला ठीक कर लो न ।

श्याम०—हाँ मैं भी तो वही कहता हूँ । द्रौपदी के नहीं पाँच पति थे ।

भगवती—तुमने लाख बात की एक बात कह दी ।
रामायण की बात पर किसी को एतराज नहीं हो सकता ।
भगवा क्यों करते हो ? इन्हें नाचने दो—गाने दो । ज़रा
मज़ा होने दो । (मोती से)—

पुतरी मतिन रखव तोहें पलकन की आड माँ ;
तोहरे बदे हम आँखी माँ बैठक बनाईला ।

गोपाल—हाँ बल्कि यह अच्छा है । गाओ तो मोती,
एक गाना गाओ !

मोती—मैं तो गाना नहीं जानती ।

गोपाल—फिर वही पाजीपन शुरू किया ! गाओ ।

मोती—मेरी आवाज़ पड़ गई है । मुझसे गाया न
जायगा ।

भगवती—अच्छा तुमसे न गाया जायगा तो न सही,
कुछ परवा नहीं । तुम्हारी ये साधिनें गावें । तुम इनके
साथ नाचोगी तो ? तुम्हारी आवाज़ पड़ गई है, पैर तो
नहीं टूट गए ? (और औरतों से) गाओ जी गाओ ।

(चारों वेश्याआ का नाचना और गाना)

खयाल—विहाग

आँख खोलकर यार दूर से देखो हमको, भला यही ,
पड़ताओगे पास बहुत जो आओगे , हम कहें सही ।
हिलती-डुलती फन फैलाती काली नागिन हैं सब हम ;
जा बदकिस्मत हमसे लिपटे, उसको मारें कम से कम ।

मरे हजारों और तड़पते पड़े हजारों घायल हैं ;
 और हजारों चटक-चुटीली सैनों ही के कायल हैं ।
 अगर राह में मिलो, हमारी परछाहीं मत पड़ने दो ,
 नीची रखो निगाह, न आँखें इन आँखों से लड़ने दो ।
 हम हैं लैप केरोसिन का, खुद जलें जलावें औरा को ,
 भला चहो तो हाथ न डालो, जान हमारे तारों को ।
 कल न पड़ेगी कमी कलक से हुए ललक से जो शंदा ,
 'हाय हाय' दिन-रात करोगे, अगर जलन कर ली पैदा ।
 हम हैं दरिया हुस्न-हँसी का, देखो दूर किनारे पर ,
 फाँदे तो बस डूब गए तुम, है पेसा ही यह चक्कर ।
 (क्रमशः सब लोग उनके साथ नाचते-गाते हैं । इसी समय

राजा का मुसाहबों के साथ प्रवेश)

भगवती—अरे अरे राजा साहब राजा साहब !

(छिप जाता है)

श्याम०—यह बेचक कैसे देख पड़े ?

भगवान०—बड़े ही बेचक हैं ! आकर मज़ा किर-
 किरा कर दिया ।

मोहन०—भैरवी में आकर कढ़ी मध्यम लगा दी !

गगाधर—अजी देखते क्या हो ? हमों को कहते हैं—

“घोर के घर छिछोर पैठा ।”

राजा—(गोपाल से) क्यों रे पाजी लड़के !

गोपाल—(खीझकर) क्या हुआ ?

राजा—तेरी ये कैसी हरकतें हैं ? पाजी अहमक बेहया बदचलन !

गोपाल—घोर आप क्या बड़े नेकचलन हैं ?

राजा—सुअर तुझे कुछ भी तमीज़ नहीं है ? नालायक हरामखोर टुकाची !

गोपाल—यस हो चुका । कहता हूँ, गालियाँ न दो ।

राजा—सुअर गधा निमकहराम !

गोपाल—कहता हूँ, चुप रहो, नहीं तो अच्छा न होगा ।

राजा—तेरी इतनी मजाल ! मैं तेरा बाप हूँ—इसका तुझे कुछ खयाल ही नहीं है ?

गोपाल—बाहरे बाप !—ऐसे बाप बहुत-से देखे हैं ।

राजा—बहुत-से क्या देखे हैं रे ?—इसे छोड़ दे ।

(मोती का हाथ पकड़ता है)

गोपाल—छोड़ क्यों न दूँगा ।

(मोती को पकड़कर अपनी ओर खींचता है)

भगवती—अब सुद-उपसुद का युद्ध शुरू हो गया । इस समय *Kalidas' Medical Jurisprudence* के अनुसार नौ-दो-ग्यारह हो जाना ही मुनासिब है ।

(मोती को पकड़कर दोनों घसीटते हैं । और लोग भी उसमें शामिल हो जाते हैं । खूब चिल्लाहट और उछल-कूद होती है)

परदा गिरता है

तीसरा अंक

पहला दृश्य

स्थान—राजा की बैठक

(राजा और मुसाहब लोग)

राजा—सब साले पाजी हैं ।

मुसाहब—जी हाँ, यह तो ठीक ही है ।

राजा—मैं बुढ़ापे में न्याह करता हूँ, तो उसमें तुम्हारा क्या है सालो ?

मुसाहब—और क्या, तुम्हारा क्या है सालो ?

राजा—इन सालों को पकड़कर क्या करना चाहिए, जानते हो राधेलाल ?

राधे०—जुतियाना चाहिए ।

राजा—अरे भाई जुतियाना ऐसी कौन नई बात है ?

मथुरा—हाँ, ऐसी कौन नई बात है ?

कुज०—खैर पुरानी होने पर भी दो-चार जूते लगा देना बुरा न होगा ।

राजा—ना, ऐसे लोगों को पकड़कर क्या करना चाहिए, जानते हो मथुरा ?

मथुरा—(सोचकर) उन पर शिकारी कुत्ते छोड़ देना क्या ठीक न होगा ?

राजा—अरे दुत ।

मुसाहब—(साथ ही साथ) अरे दुत ।

राजा—देखो ये सब साले बहुत बढ़-बढ़कर बातें करने लगे हैं । कोई-कोई मुझे देखकर मुँह पर ही गालियाँ देने लगता है । कोई आवाज़े कसता है, कोई हँसता है । सब साले पाजी हैं !

मुसाहब—सब साले पाजी हैं !

राजा—जो हो, लड़की मिल गई है । क्यों जी बनवारी, इस लड़की के साथ हालाँ कि कुश्रर गोपाल का व्याह ठीक हो गया था—तेल तक चढ़ गया है, मगर फिर भी मेरे साथ व्याह हो सकता है । ऐसे व्याह तो बहुत हो चुके हैं—क्यों जी ?

बनवारी—जी हाँ, इसमें शक ही क्या है ?

पुंज०—मगर कुश्रर साहब आपके लिये लड़की छोड़ देने को राज़ी हैं ?

राजा—नहीं तो क्या बाप से झगड़ा करेगा ? गोपाल मेरा वैसा लड़का नहीं है । क्यों जी राधेलाल ?

राधेलाल—कुश्रर जी घड़े ही सपूत हैं ।

राजा—अबकी ऐसी लड़की मिली है मथुरा कि वाह वाह !

मथुरा—वाह वाह ! ओहो हो हो !

राजा—उसका चेहरा, समझे राधेलाल ?

राधे०—भाहा हा हा !

राजा—और चेहरा उतना कैसी न होने पर भी,
उसका रंग, समझे कुज ?

कुंज०—ऊह हू हू !

राजा—और रंग उतना साफ न होने पर भी—

बनजारी—चिरुनापन है ।

राजा—हाँ जी हाँ । सब भग सुंदर नहीं है तो न सही—

कुंज०—मय भग हैं तो ।

राजा—जल्दी से एक नई औरत चाहिए । मैं कैसी
औरत चाहता हूँ सो शायद तुम लोग नहीं जानते ?

मुसाहब—जी नहीं ।

राजा—अच्छा सुनो । (गाता है)

चाहूँ पेंसी मन की नार, प्यारी न्यारी छल-बलवाली ।

लकी हो या नाटी यार, दुबली हो या हो तैयार,

मंलीमाली या प्यार, गोरी गोरी हो या काली ॥ चाहूँ० ॥

भाँ लाठी हों या कि कमान, सीपी या कि सूप हों कान,

नैन कटारी हों या वान, पेट कटोरी हो या थाली ॥ चाहूँ० ॥

बाल नाग या रेशम-लच्छे, कुच रदी हों या हों अच्छे,

आशिक को रच्छे या भच्छे, सलहज हो या छोटी साली ॥ चाहूँ० ॥

बात-बात में बिगड बिगडकर, जाय मायके चाहे लडकर,

पैरों पडकर नाक रगडकर, कर लूँगा खुश मैं टकसाली ॥ चाहूँ० ॥

खूब प्यार से कह यहाँ तक, मुझे मर्द अरे ओ प्रहमरू,
मुसा० सोना और सुगंधविलाशक, होगी उसके मुँह की गाली॥ चाहूँ०॥

राजा—देखो, इस गीत के ऊपर भाष्य करने की
ज़रूरत है; नहीं तो मेरा मतलब तुम्हारी समझ में नहीं
आवेगा।

मुसाहब—हाँ हाँ, सो तो है ही।

राजा—सुनो, चाहे उसकी आँखें नील कमल ऐसी हों
और चाहे बिछी की ऐमा करजी हों, चाहे उसके ओट
कुंदरू ऐमे हों और चाहे हवशियों के ऐसे हों, चाहे उसके
दाँव मोती के दाने हों और चाहे हाथी के ऐसे पंख-पंख
बाहर निकले हों, चाहे उसकी नाक चाँसुरी ऐसी हो और
चाहे चीनियों की ऐसी चिपटी हो, चाहे उसकी घाल
हथनी की ऐसी हो और चाहे मेंढक की ऐसी हो, कोई
दर्ज नहीं है। वह यह सब कम करे, रोवे नहीं, रसोई अच्छी
पकावे, कपड़े कम फाड़े, घरतन कम फाड़े, गहनों की
प्रसाद कम करे, थोड़ा सोवे, थोड़ा खाय और उस पर
प्यार से मुँह कहे—अरे ओ कलमुहे मरदुएँ।

मुसाहब—वाह वाह ! तो क्या कहना है ! फिर तो
मोने में सोहागा हागा। (गोपालसिंह का प्रवेश)

राजा—आओ बेटा गोपाल। कब आए ?

गोपाल—नहीं जी, यह तो हो ही नहीं सकता।

राजा—एँ एँ—क्या नहीं हो सकता भैया ?

गोपाल—मेरे साथ उसके ब्याह का सब ठीक-ठाक हो गया है। मुझे वहाना करके बाहर भेज दिया और धोखा देकर आप उससे ब्याह करना चाहते हैं ?

राजा—बेटा तुम्हारे लिये ब्याह की क्या चिंता है ? सभी और लड़की खोजे देता हूँ। क्यों जी मथुरा ?

मथुरा—यह कौन बड़ी बात है। अभी।

गोपाल—आप अपने ही लिये और लड़की न खोज लीजिए।

राजा—यह भी कहीं हो सकता है ? क्यों जी राधेलाल ?

राधे०—हाँ यह कैसे हो सकता है ?

गोपाल—मैं यह कुछ नहीं जानता। मेरा ब्याह उससे ठीक हो चुका है। मैं उससे जरूर ब्याह करूँगा।

राजा—गोपाल तुम पागल हो गए हो क्या ?—क्यों जी बनवारी ?

बनवारी—हाँ साहब, ये पागलपन के ही लक्षण तो देख पड़ते हैं।

गोपाल—मैं पागल हो गया हूँ, या आप पागल हो गए हैं ?

राजा—यह क्या कह रहा है मथुरा ?

(मथुरा विस्मय का भाव दिखाता है)

गोपाल—खैर वह चाहे जो हो, आप इस लड़की से

व्याह न करने पावेंगे । चाहे इसके लिये जान जाय और चाहे जान रहे ।

राजा—भैया तुममें तो पितृ-भक्ति का बहुत ही अभाव देख पड़ता है । क्यों राधेन्नाल ?

राधेन्नाल—बहुत ही अभाव है ।

गोपाल—और आपमें पुत्र का स्नेह बहुत प्रबल देख पड़ता है । मेरा तेल तक चढ़ गया है । और आप उसी लड़की से शादी करने को तैयार हैं । अच्छे येहया बाप हैं आप !

राजा—देखो गोपाल, कहे देता हूँ, यह झगड़ा मत करो । नहीं तो मैं तुमको त्याज्य-पुत्र कर दूँगा । क्यों जी मधुरा ?

मधुरा—इसके सिवा और उपाय ही क्या है ?

गोपाल—त्याज्य पुत्र कर दीजिएगा । मैं भी आपको त्याज्य-पिता कर दूँगा ।

राजा—त्याज्य-पिता भी कहीं होता है मूर्ख ? क्यों जी बनवारी ?

बनवारी—हाँ सो आज तक तो कभी यह बात सुनी नहीं ।

गोपाल—हो या न हो । आप यह व्याह न कर सकेंगे—सीधी बात है ।

राजा—तुम जानते हो—मैं तुम्हारा बाप हूँ !

गोपाल—वाह रे बाप ! ऐसा बाप होने से तो धरती फोड़कर पैदा होना हजार गुना अच्छा ।

राजा—क्यों यह बाप क्या तुमको पसंद नहीं है ?
हाँ ! कुंज !

कुंज०—हाँ छोटे राजा, इससे अच्छा बाप कहाँ पाओगे?
अच्छे भले बाप तो हैं !

राजा—देखो गोपाल, निकल जाओ !—क्यों जी मथुरा ?

मथुरा—सो, ऐसी अवस्था में इनका निकल जाना ही ठीक जान पड़ता है ।

गोपाल—निकल क्यों न जाऊँगा । आप खुद निकल जाइए ।

राजा—अच्छा तो फिर ले पाजी ! (प्रहार)

गोपाल—हाँ, तो यही सही ! (प्रहार)

(पिता और पुत्र की मार-पीट, मुसाहबों का भय-व्याकुल दृष्टि से देखना)

राजा—अरे बाप रे !—ओ मथुरा—ओ बनवारी—
ओ !

गोपाल—बाप है या शैतान ! नकोटे न मारो—कहता हूँ—ओ ! (किशोर का प्रवेश)

किशोर—यह क्या ! यह क्या ! (छुड़ा देता है)

राजा—देखो तो देखो तो, मार के पीस डाला !

गोपाल—और तुमने तो बड़ी रिश्तायत की है न ! देह-भर में नकोटे लिए हैं !

किशोर—छि ! लोग देखकर क्या कहेंगे ?

गोपाल—कहेंगे और क्या ? कहेंगे, ऐसे बाप के मुँह में आग लगा देनी चाहिए ।

राजा—मरने के पहले ही ?

किशोर—भगवा किस बात पर है ?

राजा—यह मुझे व्याह नहीं करने देता ।

गोपाल—क्यों करने दूँ ? आप और जगह दूसरी लड़की तलाश कर लीजिए ।

राजा—अच्छा किशोर, तू ही इस भगड़े का फ़ैसला कर दे ।

गोपाल—हाँ, तू ही बेटा इस भगड़े का फ़ैसला कर दे ।

किशोर—यह तो आप लोगों ने बड़ा संकट खड़ा कर रक्खा है । अब आपने क्या करना ठीक किया है ?

गोपाल—इसी का तो भगवा है ।

राजा—इसी का तो फ़ैसला नहीं होता ।

किशोर—अच्छा मैं फ़ैसला किए देता हूँ । (जाकर कुरसी पर बैठता है) शायद आप दोनों साहब यह समझ सकते हैं कि इस लड़की के साथ आप दोनों साहबों का व्याह नहीं हो सकता ?

दोनों—हाँ सो तो देख ही पड़ता है ।

किशोर—अगर एक के साथ व्याह हो जायगा, तो उस पर दूसरे का कोई दावा नहीं रहेगा ।

दोनों—सो तो है ही ।

किशोर—और यह भी शैरमुमकिन है कि द्रौपदी के बारे में पांडवों ने जैसा समझौता कर लिया था वैसा हो सके ।

दोनों—नहीं । वैसा कहीं हो सकता है ?

किशोर—अच्छा तो मेरा क़ैसला यही है कि “जिसकी लाठी उसकी भैंस ।”
(प्रस्थान)

राजा—क्या कहते हो घेटा ?

गोपाल—आप क्या कहते हैं ?

राजा—मैं यह व्याह ज़रूर करूँगा ।

गोपाल—मगर मैं यह व्याह कभी न करने दूँगा ।

राजा—अच्छा देखो करता हूँ कि नहीं ।

गोपाल—अच्छा देखता हूँ, आप कैसे करते हैं ।

(प्रस्थान)

राजा—छोकरे का इरादा अच्छा नहीं जान पड़ता । कुछ गढ़बढ़ ज़रूर करेगा । लेकिन मैं इस लड़की को छोड़ नहीं सकता । राम का नाम लेकर काम शुरू करता हूँ, देखू अत तक क्या होता है ।
(नौकर का प्रवेश)

नौकर—राजा साहब !

राजा—क्यों, काँप क्यों रहा है ?

नौकर—हमारी रानी जी—

राजा—रानी ? क्या हुआ ? वह तो मर गई है ।

नौकर—जी नहीं । रानी फिर जी उठी है । जो उठकर घर में बैठी पूरी-तरकारी खा रही हैं ।

मुसाहब लोग—(डरकर) राम राम राम राम राम !

राजा—अरे तू यह क्या कह रहा है !

नौकर—जी !

राजा—अब 'जी' क्या ? मरा आदमी कहीं जी सकता है ? क्यों जी कुज ?

कुंज०—हाँ, सौत के आने की खबर सुनकर मरी औरतों को जी-उठते देखा-सुना गया है ।

राजा—ऐसा भी कहीं हो सकता है मथुरा ?

मथुरा—जी हाँ यह कैसे होगा ।

राजा—मैं इस समय व्याह करने को तैयार हूँ—ऐसे देवक—

घनवारी—(नौकर से) क्यों रे, तुम्हारी रानी को जी उठने के लिये और समय नहीं था क्या ?

नौकर—तो मैं क्या करूँ । हम लोगों ने तो बहुत कुछ मना किया, मगर उन्होंने सुना ही नहीं । तब से जीकर उठ बैठीं, और परियाँ उड़ाने लगीं ।

कुंज०—किसके हुक्म से वह जी उठीं ? और अगर जाना ही था, तो इस तरह एकाएक कुछ खबर दिए बिना क्यों जी उठीं ?

किशोर—अगर एक के साथ ब्याह हो जायगा, उस पर दूसरे का कोई दावा नहीं रहेगा ।

दोनों—सो तो है ही ।

किशोर—और यह भी गैरमुमकिन है कि द्रौपदी के वंश में पाद्यों ने जैसा समझौता कर लिया था वैसा हो सके

दोनों—नहीं । वैसा कहीं हो सकता है ?

किशोर—अच्छा तो मेरा फैसला यही है कि “जि लाठी उसकी भैंस ।” (प्रस्थान)

राजा—क्या कहते हो घेठा ?

गोपाल—आप क्या कहते हैं ?

राजा—मैं यह ब्याह जरूर करूँगा ।

गोपाल—मगर मैं यह ब्याह कभी न करने दूँगा

राजा—अच्छा देखो करता हूँ कि नहीं ।

गोपाल—अच्छा देखता हूँ, आप कैसे करते हैं

(प्रस्थान)

राजा—छोकरे का इरादा अच्छा नहीं जान पड़ गड़बड़ जरूर करेगा । लेकिन मैं इस लड़की को दूँ सकता । राम का नाम लेकर काम शुरू करता अंत तक क्या होता है । (नौकर व

नौकर—राजा साहब !

राजा—क्यों, काँप क्यों रहा है ?

नौकर—हमारी रानी जी—

राजा—रानी ? क्या हुआ ? वह तो मर गई है ।

नौकर—जी नहीं । रानी फिर जी उठी हैं । जी उठकर घर में बैठी पूरी-तरकारी खा रही हैं ।

मुसाहब लोग—(ढरकर) राम राम राम राम राम !

राजा—भरे तू यह क्या कह रहा है !

नौकर—जी !

राजा—अबे 'जी' क्या ? मरा आदमी कहीं जी सकता है ? क्यों जी कुज ?

कुंज०—हाँ, सौत के आने की खबर सुनकर मरी घोरतों को जी-उठते देखा-सुना गया है ।

राजा—ऐसा भी कहीं हो सकता है मथुरा ?

मथुरा—जी हाँ यह कैसे होगा ।

राजा—मैं इस समय व्याह करने को तैयार हूँ—ऐसे चवक्र—

घनवारी—(नौकर से) क्यों रे, तुम्हारी रानी को जी उठने के लिये और समय नहीं था क्या ?

नौकर—तो मैं क्या करूँ । हम लोगों ने तो बहुत बुद्ध मना किया, मगर उन्होंने सुना ही नहीं । तद से जीकर उठ बैठीं, और पूरियाँ उड़ाने लगीं ।

कुंज०—किसके हुक्म से वह जी उठीं ? और अगर जाना ही था, तो इस तरह एकाएक कुछ खबर दिण बिना) क्यों जी उठीं ?

राजा—मैं कुछ नहीं सुनना चाहता। डॉक्टर तक कह गया कि वह मर गई।—इन सब ने इसके लिये यह सब कुचक्र रचा है कि जिसमें मैं व्याह न करूँ। जा, मैं कुछ सुनना नहीं चाहता। मैं व्याह करने जाता हूँ। देखूँ, कौन मुझे रोकता है।

(गुस्से के साथ राजा का प्रस्थान। पीछे-पीछे
मुसाहब भी जाते हैं)

दूसरा दृश्य

स्थान—राजा के महल का बाग

(किशोर अकेला)

किशोर—क्या कहूँ, कैसा सुंदर चेहरा है ! कैसा रंग है ! जैसे Potassium ferro cyanide है । कैसे गुलाबी गाल हैं ! देह क्या जैसे अंगूर की बेल है । हाथ कहाँ है ? वह कहाँ है ? हे लता ! पता बता दे, मेरी प्राणेश्वरी कहाँ है । हे झाड़ी ! तूने क्या मेरी प्रियतमा को छिपा रक्खा है ? अगर छिपा रक्खा हो तो दिखा दे । हे दीवार ! मेरी प्राणेश्वरी को बुला दे—नहीं मैं सिर फोड़ डालूँगा—ओह—ओह—(नेपथ्य में गाने की आवाज सुन पड़ती है)
वो वह आ रही है । हृदय ! धीरे-धीरे धर ।

(गाते-गाते चमेली का प्रवेश)

ठुमरी

ये हिये की बिया को मिटाय सके, विन वाही सलोने साँवरिया ,
 दियां आपने हाथ सों बाको हियो, कियो मोहिं तो बालम बावरिया।
 रखो घेरिकै घोर अँधेरो हियां, तिहि दूर करै को बिना पिय के ;
 अपने हिय सों हिय मेरो सखी, वह घेरि रखो भरि भाँवरिया।
 अब माधुरी नाहि रही मधुरे अधरान, मिट्यो रस-रग सबै ,
 परी पाँयन लोटै अनादर सों वह शारद चद की चाँदनियाँ।
 छिपे चद्रमा तारा सबै घन में, अब दुर्दिन की है बुरी ये घड़ी ;
 हँसै जैसे अकास प्रकास के पुज को, व्याकुल कै कुल-कामिनियाँ।

किशोर—अब मैं क्या करूँ ? मैं भी टहल-टहलकर
 एक Soliloquy करूँ ।

ठठा के नाज से दामन भला किधर को चले ,
 इधर तो देखिए वहरे खुदा किधर को चले ।
 अभी तो आए हो जल्दी कहाँ है जाने की ;
 ठठो न पहलू से ठहरो जरा किधर को चले ।
 चमेली—अब तो तोता ठीक-ठीक पढ़ रहा है ।

किशोर—आह !—

शुरू दो दिन से जो तुमने हमको दिखलाई नहीं ;
 कल से बेकल है, हमें कल आज तक आई नहीं ।
 इस ढिले बहशी से तुम जो भागते हो दूर-दूर ;
 अपना दीवाना इसे समझो, ये सौदाई नहीं ।

चमेली—अब तो तोता खूब पढ़ रहा है । पढ़ो बेटा
 गंगाराम पढ़ो ! पढ़ो !

किशोर—ओह !

नहीं मुमकिन कि इस चखेंदुनीसे कामेजाँ निकले ,
वदन से जान दिल से आरजू निकले तो हाँ निकले ।
जला हूँ आतिशे-फुर्कत से ऐसा शोलारुश्रों की ,
जो आहें सर्द भी खींचूँ तो सीने से धुआँ निकले ।

चमेली—अब छिपाना ठीक नहीं (आगे बढ़कर) ओ !
आप यहाँ हैं ! (लौट जाना चाहती है)

किशोर—ओ ! आप हैं ? माफ़ कीजिएगा । (दूसरी
ओर से जाना चाहता है)

चमेली—वात भूली जाती हूँ । (लौट आती है) दीदी
के लिये फूलों का गुलदस्ता बनाकर ले जाना होगा ।
नहीं वह ख़फ़ा हो जायँगी । (फूल चुनती है)

किशोर—वाह भूला जाता हूँ । (लौटकर) Botany
समाप्त किए बिना जाना ठीक नहीं है ।

चमेली—वाह कैसा सुंदर गुलाब है !

किशोर—यह *Convolvulus grandiflorus* है ।

चमेली—इसकी पँखडियाँ रुढ़ गई हैं । फिर भी
कैसा सुंदर है । आहा—गुलाब में अगर काँटे न होते—

किशोर—Wall-flower, Flora, actinomorphic, cru-
ciform Calyx, Polysepalous Corola, Polypetalous—

चमेली—बस फूल चुन चुकी ।

किशोर—हूँ—मैं भी सबक़ याद कर चुका ।

चमेली—अब चलूँ ।

किशोर—अब चलना चाहिए । (जाना चाहती है)
(दूसरी ओर से जाना चाहता है)

चमेली—राह में कोई कंटीला झाड़ भी नहीं है जो उसमें कपड़ा उलझ जाय । तो भी एक बहाना ठहरने के लिये हो जाता ।

किशोर—राह में कोई वैल भी नहीं है, जो पीछा करता । तब भी भागकर चमेली के ऊपर गिर पड़ने का एक बहाना मिल जाता ।

चमेली—(स्वगत) जान पड़ता है, मेरी बातें सुन लीं ।
(प्रकट) वाह ! यहाँ सून हवा आ रही है, ज़रा टहलकर एवा खा लेना चाहिए ।

किशोर—यहाँ देशक खूब अच्छी हवा है । सिर में दर्द भी हो रहा है । ज़रा सिर ठंडा कर लूँ ।

चमेली—क्या आपने मुझे पुकारा है ?

किशोर—आपने क्या मुझसे कुछ कहा ?

चमेली—यही बात थी तो पहले ही कह देना चाहिए था ।

किशोर—देशक इतना समय व्यर्थ ही गया ।

चमेली—ओ किशोर ! किशोर ! किशोर !

किशोर—ओ चमेली ! चमेली ! चमेली !

चमेली—मैं तो राज़ी हूँ !

किशोर—मैं कय नाराज़ हूँ !

चमेली—ओः !

किशोर—आ !

(दोनों गले लग जाते हैं)

तीसरा दृश्य

स्थान—भगवती का बैठकखाना

(अँगरेजी पोशाक पहने भगवती, श्यामलाल,

भगवानदास, मोहनलाल और गगाधर)

मोहन०—क्यों जी भगवती, रानी सचमुच मर गई ?

भगवती—जहाँ तक सम्भव है ।

भगवान०—मरने में जहाँ तक सम्भव क्या ?

भगवती—ओ ! तो जान पड़ता है, तुमने Hurler's Synthesis of Horse radish नहीं पढ़ा ? मरना दो तरह का होता है ।

भगवान०—किस किस तरह का ?

भगवती—यही एक तो मर्द का मरना—वह मर गया तो ब्रह्मा के चाप की ताकत नहीं जो उसे जिला सके । और दूसरा औरतों का मरना है—वे बात-बात में कहती हैं—‘मरो’, ‘मरती हूँ’, ‘मर जाऊँ तो जान बचे’ इत्यादि । इस मरने का कोई विशेष अर्थ नहीं है ।

गगाधर—तो रानी सचमुच नहीं मरीं ?

भगवती—मैंने तो देखा था, दाँत-वाँत बैठ गए थे; फिर न नरी एो, तो यह उसी का दोष है। मैं क्या करूँ ?

भगवान०—तब तो तुम अच्छे डॉक्टर हो जी। आदमी सरगया या जिंदा है, सो भी तुम ठीक-ठीक नहीं बता सकते।

भगवती—भैया अब चालाकी की जरूरत नहीं है। मैं रपड़ देकर अमेरिका से M D का टाइटिल मँगा लिया है। अभी तक लोग मुझे कुछ समझते हीन थे। अब आदमी को मार टालूँगा और मुँह में थप्पड़ मारकर प्रीम के रपड़ ले लूँगा। कोई कुछ कह नहीं सकता—M D हूँ।

मोहन०—ओ ! इसी से आज कल यह फैशन बना रक्खा है।

भगवती—(गाता है)—

Hily hily hily ho tara la la la la le
Foldi roldi roldi ra hily hily hily hi

मोहन०—प्राँ देखा है, अँगरेज़ी गीत भी सीख लिए हैं।

भगवती—भैया अब चालाकी की जरूरत नहीं। M D हूँ।

न्याम०—क्यों जी, राजा और व्याह करने जा रहा है ?

भगवती—जाता क्या है। गया। Going, going, gone

गगाधर—आज तो अँगरेज़ी का फुहारा छूट रहा है।

(गोपाल का प्रवेश)

श्याम०—क्यों जी छोटे राजा ?

गगाधर—छोटे राजा सलाम ।

(दोनों पैरों से सलाम करता है)

भगवान०—छोटी रानी के आने में कितनी देर है ?

मोहन०—क्यों यार ! क्या खबर है ? मुँह कुछ उदास देख पड़ रहा है । अभी क्या सोकर उठे हो या नशे की खुमारी है ?

गोपाल—जाओ तुम लोगों से दोस्ती आज में खतम !

(दूर जाकर बैठा है)

श्याम०—क्यों जी, दोस्ती क्यों खतम ?

भगवान०—अजी इतने फासले पर क्यों बैठे हो ?

गगाधर—अरे बात क्या है ?

मोहन०—लो चुरुट पियो ।

गोपाल—जाओ । मैं तुम लोगों के लिये इतना करता हूँ, लेकिन मुझे जरूरत पड़ने पर तुम लोगों से कुछ मदद नहीं मिलती ।

श्याम०—अरे भाई मामला क्या है ? खुलासा करके कहो—पहेली बुझाना छोड़ो ।

गोपाल—बूढ़े राजा की करतूत सुनी है ?

श्याम०—सुनी है ।

मोहन०—लडकियों का ऐसा क्या काल पड़ा है, जो तुम्हारे बाप तुम्हें बेदखल किए देते हैं ।

गोपाल—धूँड़ा कहता है कि उसे जल्दी से एक व्याह करने की बड़ी जरूरत है। उसके चार व्याह हो चुके हैं और मेरा एक व्याह भी नहीं हुआ।

(रोना चाहता है)

गंगाधर—हाय हाय, कैसा अधर है !

श्याम०—व्याह करने के लिये क्या गए ?

गोपाल—(रोकर) हाँ ।

भगवान०—आज तो “अयहृत्पर्श” है, व्याह होगा कैसे ?

गोपाल—पंडित ने घूम खाकर मुहूर्त बता दिया है ।

मोहन०—ये कलिकाल के पंडित जो न करें सो थोड़ा ।

गोपाल—इस समय मैं मार-पीट तक करने को तैयार हूँ—

अगर तुम लोग मेरी मदद करो ।

गंगाधर—अच्छा, तुम कुछ सोच न करो। इस व्याह को अगर मैं भरभटन कर दूँ, तो मेरा नाम गंगाधर नहीं।

चलो जी चलो ।

भगवान०—क्या करोगे ? राजा को चौक पर से उठा

लाओगे ? या सीता-हरण करोगे ?

मोहन०—अच्छी बात है। चलो। मैं यही सोच रहा था कि आज पदली का दिन है, बैठे-बैठे क्या किया जाय।

यह अच्छा काम मिल गया ।

श्याम०—बूढ़े की हवस मिटती ही नहीं। कैसा उल्लू

है।—चलो जी चलो ।

मोहन०—साले का ग्याह करना क्या खतम ही न होगा।
यह भी क्या *arithmetical progression* है। चलो।

(खड़ा हो जाता है)

भगवान०—शरे उसकी बात क्या कहते हो ? वह निरा
शहमक बेहया पाजी है ! ऐसा न होता तो लड़के से
उसकी जोरु छीन लेने की कोशिश करता ? चलो।

(खड़ा हो जाता है)

गंगाधर—इसी का नाम है पत्ते सिरे का बेहयापन।
चलो।

(खड़ा हो जाता है)

भगवती—ना दादा ।—, (गाता है)

यही तो है देखो जी प्रेम।

जब न रहे *future* की चिंता, रहे न बिल्कुल *shame* यही० ॥

past all surgers होय जब *past all* हों *hope*,

उसके बिना लगे जब जिवन मनों दैव का कोष ॥ यही० ॥

हो वह दबशी या जापानी चीनी हो या मेम।

blind deaf या *dumb-bland* या *hunch back* या *lame* यही० ॥

जिवन-चित्र मनोहर का है *lore* ही सुंदर *frame*,

उसके बिना नहीं हो सकता कुछ भी कुशल-क्षेम ॥ यही० ॥

परदा गिरता है

चौथा दृश्य

स्थान—विवाह-मंडप

(चारों ओर औरतें हैं । बीच में राजा है)

१ औरत—मैया रे ! यह बूढ़ा वर !

२ औरत—मैया रे ! तीन पन धीत गए, फिर भी
व्याह की साध नहीं गई !

३ औरत—वर है कि लडकी का वाधा है !

४ औरत—पूँसे बूढ़े को भी कोई लडकी देता है ?

५ औरत—घरे ये लोग चढाए हैं ! रुपए के लोभ से
लडकी बेचते हैं ।

६ औरत—कितन रुपए लिए हैं ?

७ औरत—कौन जाने वहन ।

८ औरत—लडकी कहाँ है ? दुल्ल की रीति होनी चाहिए ।

९ औरत—हां जी । हमें क्या करना है । हम परोसिने
हैं । जिमकी लडकी है उसी ने नहीं झगाल किया ।

१० औरत—वर के सिर पर वह रावन का ग्यारहवाँ
सिर है क्या ?

११ औरत—अर भाई वर को चौक पर ले चलो—वह
स्वांग की तरह वच तक सड़ा रहेगा ?

१२ औरत—वाह वाह ! वर का आधा मुँह चूने से और
आधा मुँह कोयल से कितने रँग दिया है ?

१ औरत—बीच-बीच में संदुर की टिपकियाँ भी लगी हैं। यह तो सचमुच स्वाँग बनकर आया है।

६ औरत—सुकुमारी के भाग्य में क्या यही बूढ़ा वर घटा था।

४ औरत—भजी तुम लोग ज़रा चुप रहो। अरे ओ विंदो की मा, लड़की कहाँ है ?

(लड़की का बाप लड़की लेकर आता है)

३ औरत—वह लो लड़की आ गई।

१ औरत—पुरोहित जी, काम शुरू करो।

४ औरत—वही राजा का पुरोहित है ? यह तो मन्त्र क्या पढ़ता है जैसे चिख्ता चिख्ताकर दोहाड़ दे रहा है।

१ औरत—अरे बाहर बाजे बजाने के लिये तो कहो।

(पुरोहित व्याह का काम शुरू करते हैं। औरतें गाती हैं। बाहर बाजे बजते हैं। इसी बीच में अपने

मित्रों के साथ गोपालसिंह का प्रवेश)

गोपाल—बाबू जी यह क्या ?

राजा—(घबराकर) क्यों बेटा !

गोपाल—चौक पर से उठिए, इस लड़की से मेरा व्याह होगा।

राजा—आः, परेशान क्यों करते हो भैया।

गोपाल—यस, कहता हूँ, उठ आइए।

राजा—अरे बेटा, मैं कल ही तुमको और लड़की खोज दूँगा।

ज्याम०—(गोपाल से) अरे यह घूंसट क्या सहज में ठठेगा ?

भगवान०—बूढ़े के शर्म तो है ही नहीं ।
राजा—आः, मेरा व्याह हो जाने दो, फिर जो करना हो सो करो ।

ज्याम०—(गोपाल से) कहो तो हाथ पकड़कर घसीट लें ?

भगवान०—हाँ हाँ घसीट लो ! अजी मोहन, तुम्हारे हाथ-पैरों में तो जोर भी सूब है ।

गंगाधर—हाँ जी, सीता-हरण करो ।

राजा—अरे भाई द्वारा ठहर जाओ ।

(सब मिलकर हाथ पकड़कर राजा को बाहर उठा ले जाते हैं । गोपालसिंह जाकर वर के आसन पर बैठ जाता है)

१ धौरत—मैया रे मैया, यह क्या है जी ?

२ धौरत—ऐसा तो कभी नहीं देखा !

३ धौरत—यह तो दक्ष-यज्ञ-विध्वंस है !

४ धौरत—अब और क्या होगा ! हमी लड़के के साथ व्याह कर दें ।

५ धौरत—दमी लड़के के साथ तो व्याह की बात-चीत पकी हुई थी ।

६ धौरत—अरे गडबड क्यों करती हो । यह वर तो उस बूढ़े से अच्छा है ।

(पुरोहित फिर मंत्र पढ़ना शुरू करता है । फिर बाजे बजते हैं । औरतें गाती हैं । इसी बीच में राजा के मुसाहब आकर

गोपालसिंह को आसन पर से उठा ले जाते हैं)

१ औरत—मैया रे, अब फिर यह क्या हुआ ?

२ औरत—इस लड़की का ब्याह हो न होगा ।

३ औरत—वही तो देख पड़ता है । फिर क्या होगा ?

४ औरत—होगा क्या ?

४ औरत—पुरोहित जी बेकार मंत्र क्यों पढ़ रहे हो ?

पुरोहित—(पीनक से चौंकर) हाँ लड़का कहाँ है ?

लड़की का बाप—मैं क्या जानूँ ।

पुरोहित—ब्याह की लग्न बीती जाती है ।

लड़की का बाप—फिर मैं क्या करूँ ?

पुरोहित—लग्न बीत जायगी तो फिर इस लड़की का ब्याह न हो सकेगा ।

लड़की का बाप—तो फिर क्या किया जाय ?

(किशोर का प्रवेश)

किशोर—अरे यह शोर-गुल काहे का है ?

१ औरत—यह कौन है ?

२ औरत—यह राजा का पोता है ।

३ औरत—इसका ब्याह हो गया ?

४ औरत—ना, इसका ब्याह नहीं हुआ ।

१ औरत—(लडकी के बाप से) तो फिर हमी के साथ न कर दो ।

लडकी का बाप—(किशोर से) भैया, तुम अगर अनुग्रह करके मेरी लडकी से व्याह कर लो—

किशोर—बयो, राजा कहाँ हैं ?

लडकी का बाप—कुछ गराची आकर उन्हें उठा ले गए ।

१ औरत—भैया तुम इन लडकी से व्याह कर लो ।

किशोर—यह भी कही हो सकता है ?

२ औरत—हो क्यों नहीं सकता भैया ।

किशोर—नहीं जी नहीं, मे इन लडकी से कैसे व्याह कर लू ?

३ औरत—भैया यह लडकी तुम्हारे ही लायक है ।

४ औरत—लडका वैसा सुंदर है ।

२ औरत—धेगुरु क्या अच्छी जोटी है ।

४ औरत—भैया तुमको यह व्याह करना ही पड़ेगा ।

किशोर—इन तरह जल्दी से कहीं व्याह किया जाता है ?

५ औरत—किया क्यों नहीं जाता । पुरोहितजी !

मंत्र पढ़ो ।

(पुरोहित फिर मंत्र पढ़ता है । औरत गाती हैं । बाजे बजते हैं)

१ औरत—(लडकी के बाप से) कन्यादान करो ।

किशोर—यह क्या जबरदस्ती पकड़कर ?

लडकी का बाप—भैया !

(हाथ जोड़ता है)

किशोर—अरे ज़रा मेरी बात तो सुनो ।

लडकी का बाप—अब कुछ न कहो-सुनो ।

किशोर—मगर—

पुरोहित—(लडकी के बाप से) जल्द कन्यादान करो ।

(किशोर भागना चाहता है । औरत उसे पकड़ लेती है ।

पुरोहित कन्यादान का सकल्प पढता है)

किशोर—यह तो कन्यादान नहीं, ज़बर्दस्ती है ।

लडकी का बाप—(हाथ जोड़कर) भैया !—

पुरोहित—(सकल्प पढकर) जल्द कन्यादान करो ।

लडकी का बाप—मुझे क्या कहना होगा ?

पुरोहित—कहो, मैं कन्या देता हूँ ।

लडकी का बाप—मैं कन्या देता हूँ ।

पुरोहित—चलो, बस व्याह हो गया ।

किशोर—ज़बर्दस्ती से । (राजा का प्रवेश)

राजा—लो मैं आ गया । (गोपाल का प्रवेश)

गोपाल—और मैं भी आ गया ।

किशोर—अब झगडा करना बेकार है । लडकी का व्याह तो हो गया ।

राजा और गोपाल—(आँखें फाड़कर) हे ! हो गया !!

किसके साथ !!!

किशोर—मेरे साथ ।

गोपाल—क्यों रे पाजी लडके !

किशोर—मैं क्या करूँ चाचा ? इन लोगों ने ज़बर्दस्ती मुझे पकड़कर मेरे साथ व्याह कर दिया ।

(व्यस्तभाव से चमेली का प्रवेश)

गोपाल—कान है ? ऊपर गिरा पड़ता है ?

किशोर—हाँ अब यह आप ही के गले पड़ेगी ।

गोपाल—कैसे ?

किशोर—आप अब इन्हीं के साथ व्याह करिएगा । आपको अधिक कुछ न करना पड़ेगा । मैंने कोर्टशिप-ओर्टशिप सब ठीक कर रखी है । उसके लिये आपको कुछ कष्ट नहीं उठाना पड़ेगा । सिर्फ़ व्याह करना बाज़ी है ।

गोपाल—क्या ? इसमें ?

किशोर—इससे नहीं तो और किससे ?

गोपाल—(गिर गिराते हुए) लाचारी है ?

राजा—और मैं ? मैं क्या यों ही रह जाऊँगा ?

किशोर—आपके लिये क्या चिंता है दादा । इस लटकी ने जैसा मैंने व्याह किया वैसे आपने । बात एक ही है । रहेगी तो आप ही के घर में । (रानी का प्रवेश)

रानी—राजा !

राजा—(कोपकर) रानी ! तुम हो ?

रानी—हाँ, मैं नहीं हूँ तो और कौन है ?

राजा—तुम मरीं नहीं ?

रानी—हम लोगों की जान मडली की जान है ।
मरकर भी हम नहीं मरती ।

किशोर—फिर दादाजी अब आप क्या करेंगे ? आपको
व्याह करने का शौक हुआ है ? न हो, इन रानी से ही
फिर व्याह कर लो !

राजा—(सिर खुजाते हुए) लाचारी है !

(भगवती का प्रवेश)

राजा—क्यों डॉक्टर, रानी तो मरीं नहीं ?

भगवती—ज़रूर मर गई है ।

रानी—मर कैसे गई हूँ ? मैं तो सदेह सब के सामने
खड़ी हूँ ।

भगवती—मैं नाडी दख चुका हूँ, आप मर गई थीं ।
अब आपके कहने ही से कैसे मान लूँ कि आप
नहीं मरीं ?

किशोर, गोपाल और राजा—ज़रूर मरीं हैं !

(भगवती को मारते हैं)

भगवती—अरे भाई रानी नहीं मरीं तो न सही । मैं
क्या करूँ जो रानी नहीं मरीं ? बापरे ! एकदम तीन
पुश्त मिलकर मार रहे हैं ! छोड़ दो—छोड़ दो । ओह—
बापरे ! मर गया !

राजा—जाने दो—सब भरभड हो गया !

भगवती—मैं तो जानता था कि आप बेटा पोता

तीनों मिलकर "व्यहस्पर्श" जुट गया है तब कुछ गड़बड़-
झाला हुण्ड बिना नहीं रह सकता ।

रानी—राय, प्रेम का क्या यही अजाम है ?

भगवती—हाँ प्रेम एक विचित्र बीमारी है । विचित्र
है । व्यह होने के दो-तीन साल बाद ही अच्छी हो
जाती है । Run-kin की Pathology में लिखा है कि—

राजा—जाओ, अपना बेहूदापन रहने दो ।

(सब मिलकर गाते हैं)

बंट मज का प्रेम तमाशा, प्रेमी भी है चीज बड़ी ,
अरं प्रेम की अद्भुत लीला, जादू की है यही छड़ी ।
प्रथम मिलन के चुबन में सब जीते ही मर जाते हैं ,
अरं गले लगते ही जैसे स्वर्ग हाथ में पाते हैं ।
पहले तो इस प्रेम-नशे में तुच्छ जगत सब लगता है ,
रात रात-भर पडा पलंग पर प्यारा प्रेमी जगता है ।
प्रथम विरह में "हाय हाय, मैं मरा, आह, ठ " होता है ,
प्रभु प्राणेश्वर, प्रिये, प्रियतम कहकर विरही रोंता है ।
वितु अत को फीका पड़ता रंग प्रेम का टट फिश ,
तब सब खेल प्रेम का प्यारो, हो जाता है आपफिनिश ।

परदा गिरता है

यहाँ से मँगाइए

हिंदुस्थान-भर की,

सभी प्रकार की

और

सभी विषयों की

हिंदी-पुस्तकें

बड़ा सूचीपत्र मुफ्त

हमारी ही हिंदुस्थान में हिंदी-पुस्तकों

की सब से बड़ी दूकान है ।

पत्र-व्यवहार का पता—

गंगा-पुस्तकमाला कार्यालय

३०, अमीनाबाद पार्क, लखनऊ

